SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 23 • ISSUE 02 • APRIL 2024

हिन्दी मासिक

अप्रैल 2024

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

हम आज़ाद नहीं पाबंद हैं

रमज़ान ख़त्म होने के बाद आप यह न समझें कि छुट्टी हो गई, अब हम आज़ाद हैं जो चाहे करें, हरगिज़ ऐसा नहीं, आप आज़ाद बिलकुल नहीं हैं, आपके गले में इस्लाम का तौक (पट्टा) पड़ा है, आपकी तख़्ती, आपके परिचय पत्र पर लिखा है कि आप मुसलमान हैं, हर व्यक्ति को समझना चाहिए कि यह इस्लाम का रोज़ा है, सारी उम्र का रोज़ा है जो कभी टूट नहीं सकता। हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह.)

एक प्रति ₹ 30/=

वार्षिक ₹ 300/=

सरपरस्त
ह़ज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई ह़सनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

अप्रैल 2024 वर्ष 23 अंक 02

ईद का दिन

ईद के तड़के ही से फरिश्ते यह आवाज़ लगाने लगते हैं कि लोगो! नमाज़ को चलो और इबादत को आमादा हो, ईद का दिन अगरचे खाने पीने और ख़ुशी मनाने का दिन है लेकिन हक़ीक़त में ईद का दिन जाँच–पड़ताल और महीने भर के हिसाब किताब का दिन है, ख़ुश नसीब है वह जिस का खाता आज नेकियों और ताअतों से लबरेज़ नज़र आए।

(मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी रह0)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
ईदुल फित्र इस्लामी त्योहार	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	08
इस्लामी अक़ीदे	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	11
ईश्वर मानव जाति से निराश नहीं	हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0	12
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	14
ईदुल फित्र की रात इंआम की रात	ह0 शैखुल हदीस मौ0 मु0 ज़करिया कांधेलवी रह0	17
समान नागरिकता संहिता	प्रो0 अतीक़ अहमद फ़ारूक़ी	18
समाज से बुराईयाँ दूर कीजिए	अमतुल्लाह तस्नीम	20
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	24
मानव सेवा	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	26
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	27
पूरा पूरा इनसाफ़	शकील अहमद	30
राम प्रसाद के ठेंगे	शमीम इक़बाल खाँ	36
स्वास्थ्य	इदारा	39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू मोहम्मद आमिर नदवी	41
अहले ख़ैर हज़रात से	इदारा	42

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-यूसुफ़ः-

अनुवादः—

उन्होंने कहा ये भ्रम डालने वाले सपने हैं और इन सपनों का मतलब हम नहीं जानते(44) और उन दो (कैदियों) में जिसको रिहाई मिली थी जिसे एक ज़माने के बाद याद पड़ा वह बोल उठा कि मैं आप लोगों को इसका मतलब बताये देता हूँ थोड़ा मुझे जाने दीजिए[1](45) ऐ यूसुफ! सत्यमूर्ति! हमको थोड़ा मतलब बताइये उन सात मोटी गायों के बारे में जिनको सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालियों और सात दूसरी सूखी बालियों के बारे में कि मैं लोगों के पास ले जाऊँ ताकि उनको मालूम हो जाये(46) उन्होंने कहा तुम सात साल लगातार खेती करते रहो फिर जो तुम काटो उसको बालियों में रहने दो सिवाय उस थोड़े भाग के जो तुम खाओ(47) फिर उसके बाद सात साल बड़े कठिन आएंगे जो भी तुमने उन सालों के लिए इकट्ठा कर रखा होगा वह सब खा जाएंगे सिवाय थोड़े भाग के जो तुम सुरक्षित रखोगे(48) फिर वह साल आयेगा जिसमें लोगों को खूब पानी मिलेगा और उसमें लोग (शीरा) निचोड़ेंगे[2](49) और राजा ने कहा कि उनको मेरे पास ले कर आओ फिर जब दूत उनके पास पहुँचा तो उन्होंने कहा अपने मालिक के पास वापस जाओ फिर उससे पूछो कि उन औरतों की क्या कहानी है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे बेशक मेरा पालनहार उनकी चाल से अवगत है(50) राजा ने कहा कि तुम्हारी क्या कहानी है जब तुमने यूसुफ़ से उसके काम वासना की इच्छा की थी, बोलीं पाक है अल्लाह! हमें तो उनमें कोई बुराई न मालूम हुई, अज़ीज़ की पत्नी कहने लगी जब तो सच खुल कर सामने आ ही गया, मैंने ही उनको उनके काम वासना के बारे में बहकाया था और वे बेशक सच्चे हैं(51) यूसुफ बोले यह मैंने इस लिए किया कि वह (अज़ीज—ए—मिस्र) जान लें कि मैंने छिप कर उनके साथ विश्वासघात नहीं किया और यह कि अल्लाह विश्वासघातियों की चाल चलने नहीं देता(52) और मैं अपने मन को पवित्र नहीं कहता, मन तो बुराई ही सिखाता है, हाँ मेरे पालनहार की जो कृपा हो जाए बेशक मेरा पालनहार बड़ा ही माफ़ करने वाला बहुत ही कृपालु है[3](53) और राजा ने कहा कि उनको ले आओ मैं उनको अपना विशेष सहायक बना लूं फिर जब उनसे बातचीत की तो कहा कि आज से तुमने हमारे पास विश्वसनीय हो कर स्थान पा लिया(54) उन्होंने कहा मुझे देश के ख़जानों पर नियुक्त कर दीजिए मैं रक्षा करने वाला भी हूं और ज्ञान भी रखता हूं(55) और इस प्रकार यूसुफ़ को हमने देश में सत्ता प्रदान की कि वे जहाँ चाहें रहें, हम जिसको चाहते हैं अपनी कृपा से सम्मानित कर देते हैं और अच्छा काम करने वालों के बदले को बर्बाद नहीं करते(56) और बेशक आख़िरत का बदला उन लोगों के लिए बेहतर है जो ईमान ले आए और

वे परहेज़गार रहे[2](57) और यूसुफ़ के भाई आये फिर उनके पास पहुँचे तो यूसुफ़ ने उनको पहचान लिया और वे उनको पहचान न सके(58) और जब उनका सामान यूसुफ़ ने तैयार करा दिया तो कहा कि (अबकी बार) अपने सौतेले भाई को भी मेरे पास लाना, तुम देखते नहीं हो कि मैं माप–मंत्र भर भर कर देता हूँ और मैं मेहमानदारी भी अच्छी करता हूँ(59) फिर अगर तुम उसको न लाए तो तुम्हारे लिए न मेरे पास कोई अनाज है और तुम मेरे करीब भी मत होना(60) वे बोले कि हम अपने बाप को इसके बारे में राज़ी करने का प्रयास करेंगे और हम ऐसा ज़रूर कर लेंगे(61) और अपने कर्मचारियों से उन्होंने कहा कि उनकी पूंजी उनके सामान में रख दो ताकि जब वे अपने घर वापस हों तो उसको पहचान लें, शायद वे फिर आएं(62) फिर जब वे अपने पिता के पास वापस पहुंचे तो उन्होंने कहा ऐ हमारे अब्बा जान! हमारा अनाज बंद कर दिया गया है तो आप हमारे भाई को हमारे साथ भेजिए तो हम अनाज ला सकेंगे और हम ज़रूर उनकी रक्षा करेंगे[5](63)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. जब राजा ने सपने का अर्थ पूछा तो दरबारियों ने माफ़ी मांग ली तब राजा के उस दरबारी को हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम याद आये, भागा–भागा जेल पहुंचा और मतलब पूछा।

2. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जो अर्थ बताया था उसका सार यह था कि आने वाले सात सालों में मौसम ठीक रहेगा, यह सात हरी बालियां हैं, और फिर सात साल सूखा पड़ेगा, यह सूखी बालियां हैं, और सात सालों का इकट्ठा किया हुआ अनाज सूखे के सालों में खा जाएंगे, यह मोटी सात गायें हैं जिनको दुबली गायें खा रही हैं, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने मतलब के साथ साथ उपाय भी बता दिया कि सात साल जम कर खेती करो और उपज बालियों में रहने दो, बस आवश्यकता अनुसार ही निकालो, सूखे के सालों में वह काम आएगा, थोड़ा बचेगा उसको फिर बो देना फिर खूब वर्षा होगी और अच्छी फसल होगी, लोग अंगूर का रस निचोड़ेंगे, जब बादशाह ने मतलब और उपाय सुना तो अचंभित हो गया और तुरंत बुलाया, मगर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने प्रकरण साफ़ होने से पहले जाने से इनकार कर दिया और दूत से कहा कि जा कर राजा को घटना याद दिलाओ और जाँच कराओ, राजा सब जानता ही था, महिलाओं को हाज़िर किया और पूछा तो सबने स्वीकार कर लिया, उसकी पत्नी ने साफ़ स्वीकार किया कि मुझसे ग़लती हुई और यूसुफ़ सदाचारी पुरुष हैं, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जेल से निकलने से पहले ही जाँच इसलिए करा ली कि कोई संदेह किसी के दिल में बाक़ी न रह जाए।

3. यह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की बहुत बड़ी दास्तां है, निर्दोष सिद्ध हो जाने के बाद भी किसी बड़ाई का प्रदर्शन नहीं किया बल्कि इसका संबंध भी वास्तविक मालिक से कर रहे हैं।

4. हज़रत यूसुफ़ अहैहिस्सलाम से जब राजा ने बात की तो उनकी युक्ति, तत्वदर्शिता और ज्ञान पर बधाई देने लगा और पूछा कि अगले वर्षों में आने वाली परिस्थितियों की ज़िम्मेदारी किसके हवाले की जाए, हज़रत यूसुफ़ अहैहिस्सलाम ने

शेष पृष्ठ ...10..पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

ग़रीबों और कमज़ोरों के साथ हमदर्दी और प्रेम का बयानः-

कमज़ोरों की श्रेष्ठताः—

हज़रत मुस्अब बिन सअद बिन अबू वक्कास रज़ि0 से रिवायत है कि सअद के अन्दर यह ख्याल पैदा हुआ कि वह दूसरों से बेहतर हैं, आप सल्ल0 ने फरमाया तुम्हारे कमज़ोरों ही के कारण तुम्हारी मदद की जाती है और तुम्हें रोज़ी भी मिलती है। (बुखारी)

गरीबों के कारण अमीरों की मददः—

हज़रत अबू दर्दा रज़ि0 बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से फरमाते हुए सुना, आप फरमाते थे कि मुझे कमज़ोरों में तलाश करो, क्योंकि कमज़ोरों के कारण ही मुझको रोज़ी मिलती है और तुम्हारी मदद की जाती है।

(अबू दाऊद)

विधवा और निर्धन की खबर रखने पर बड़ा बदलाः—

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्ल0 ने फरमाया विधवा और निर्धन के लिए दौड़ धूप करने वाला अल्लाह के रास्ते में लड़ने वाले की तरह है। और मेरा ख्याल यह है कि आप सल्ल0 ने यह भी फरमाया उस आबिद (इबादत गुज़ार/ईश भक्त) की तरह है जो सुस्त न पड़े और उस रोज़ेदार की तरह है जो इफ़्तार न करे (अर्थात हमेशा रोजा रखे)। (बुखारी व मुस्लिम)

सबसे बुरी दावतः—

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया बुरा खाना वलीमा का वह खाना है जिससे उन लोगों को रोका जाए जो खुद से आना चाहते हैं और उन लोगों को बुलाया जाए जो आने से इंकार करते हैं (यानी खाते—पीते लोगों और अमीरों को बुलाया जाए और मुहताजों और गरीबों को रोका जाए) और जो दावत (न्योता) कबूल न करेगा वह अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करेगा। (बुखारी व मुस्लिम)

अनाथ का भरण—पोषणः—

हज़रत सहल बिन सअद रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया कि यतीम की कफालत (भरण—पोषण) करने वाला और मैं जन्नत में इस तरह होंगे। और (यह फरमाते हुए) आपने अंगूठे के बगल वाली अंगुली और बीच वाली बड़ी अंगुली में कुछ अन्तर रख कर बताया कि इस तरह।

(मुस्लिम)

लड़कियों का पालन—पोषणः—

हज़रत अनस रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया— जो दो लड़कियों का पालन—पोषण उस समय तक करे कि वो जवान हो जाएं तो क़यामत के दिन वह इस हाल में आएगा कि मैं और वह इस तरह होंगे, फिर आप सल्ल0 ने अंगुलियों को मिला दिया (मतलब वह मुझ से बहुत करीब होगा) (मुस्लिम)

लड़कियों के साथ अच्छा सुलूक़ नजात (मुक्ति) का कारण हैः—

हज़रत आइशा रज़ि0 बयान करती हैं कि मेरे पास एक औरत आई और उसके साथ दो लड़कियां थीं, उसने मुझ से मांगा, मेरे पास एक खुजूर के सिवा कुछ भी नहीं था, वही मैंने उसको दे दिया तो उसने उसको अपनी दोनों लड़कियों में बाँट दिया और खुद कुछ भी न खाया और चली गई, नबी करीम सल्ल0 जब तशरीफ लाए तो मैंने यह किस्सा सुनाया। आप सल्ल0 ने फरमाया जो इन लड़कियों के चलते कोई आज़माइश में पड़ जाए, फिर भी वह उनके साथ अच्छा सुलूक करे तो वह लड़कियाँ उसके लिए जहन्नम से आड़ बन जाएंगी।

(बुखारी व मुस्लिम)

❖❖❖

सम्पादकीय

ईदुलफित्र इस्लामी त्योहार

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

मुसलमानों के दो बड़े त्योहार ईदुलफित्र और ईदुल अज़हा हैं जिनको ईद व बक़रईद के नाम से भी याद किया जाता है। ईद रमज़ान के महीने के अन्त और शव्वाल के चाँद के दिखाई देने पर शव्वाल की पहली तारीख़ को होती है। चूंकि रमज़ान का महीना रोज़े का महीना है और वह धैर्य तथा संयम, उपासना तथा धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्रियाओं में व्यस्त रहने में बीतता है अतः स्वाभाविक रूप से ईद के चाँद की बड़ी प्रतीक्षा होती है। विशेष कर उन्तीसवीं के चाँद की। उर्दू में ''ईद का चाँद'' और ''उन्तीसवीं का चाँद'' प्रसन्नता और आनन्द हेतु लोकोक्ति (कहावत) बन गये हैं, रमज़ान की उन्तीसवीं तारीख़ को सूर्यास्त होने के समय मुसलमानों की निगाहें आसमान की ओर होती हैं, और प्रत्येक आयु एवं वर्ग के लोग चाँद की खोज में व्यस्त होते हैं, उन्तीसवीं को चाँद दिखाई नहीं देता तो अगले दिन फिर रोज़ा रखा जाता है और तीस का चाँद निश्चित रूप से हो जाता है। जैसे ही चाँद पर दृष्टि पड़ती है, चारों ओर मुबारक, सलामत की पुकार होने लगती है, छोटे बड़ों को सलाम करते हैं, बच्चे खानदान के बुजुर्गों तथा महिलाओं को ईद का शुभ संदेश सुनाते हैं और उनकी दुआएं लेते हैं जो लोग पढ़े लिखे हैं और सुन्नत के अनुसार काम करने का प्रयत्न करते हैं वह चाँद देख कर निम्नलिखित दुआ पढ़ते हैं:—

''ऐ चाँद मेरा और तेरा मालिक अल्लाह है, तू हिदायत और भलाई का चाँद है, ऐ अल्लाह इस महीने को हमारे ऊपर शान्ति एवं ईमान, सलामती तथा आज्ञापालन और अपनी प्रसन्नता प्राप्ति की क्षमता के साथ आरम्भ कर''।

कई दिन पहले से ईद की तैयारी शुरु हो जाती है परन्तु ईद की रात में बड़ी हमाहमी और बाज़ारों और घरों में चहल पहल होती है, प्रातः काल से ही ईद से संबंधित क्रियाएं आरंभ हो जाती हैं। इस तथ्य को व्यक्त करने के लिए कि आज रोज़ा नहीं है और अल्लाह ने 29 या 30 दिन के प्रतिकूल आज, दिन के किसी भी भाग में खाने पीने की अनुमति प्रदान करदी है, सुबह ही सुबह अपनी क्षमता अनुसार खजूर या किसी मीठी वस्तु से सत्कार किया जाता है फिर नहा धो कर अच्छे साफ़ सुथरे कपड़े पहन कर ज़्यादा तर नये कपड़े पहन कर खुशबू और इत्र का प्रयोग करके और धीमी धीमी आवाज़ में तकबीरात पढ़ते हुए ईद की नमाज़ पढ़ने के लिए ईदगाह और मस्जिद जाते हैं, हुक्म यह है कि ईदगाह एक रास्ते से जाओ और दूसरे रास्ते से वापस आओ, तकबीरात में अल्लाह की बड़ाई और किबरियाई का ज़िक्र होता है, ईद और बक़रईद की नमाज़ों की एक खास बात यह भी है कि और नमाज़ों की तरह इन दो नमाज़ों में अज़ान और इक़ामत नहीं होती इसके अलावा इन दो नमाज़ों में ज़ायद तकबीरें, होती हैं। ईदगाह जाने से पहले ग़रीबों के लिए दान हेतु कुछ अनाज अथवा नक़द के रूप में

निकालते हैं जिसको सदक़–ए–फित्र कहते हैं, यह मानो रमज़ान के रोज़ों के प्रति कृतज्ञता का प्रदर्शन है। यदि गेहूँ के रूप में हो तो एक व्यक्ति का सदक–ए–फित्र एक किलो सात सौ ग्राम और अगर जौ हो तो उसका दोगुना अथवा उसका मूल्य भी अदा किया जा सकता है, जो अनाज के भाव के अनुसार घटता बढ़ता रहता है, यह सदक़ा अथवा दान बालिग़ों के अतिरिक्त बच्चों की ओर से भी अदा किया जाता है। ईद की नमाज़ सूरज चढ़ने के बाद अदा करना सुन्नत है और इसमें जितनी जल्दी हो उतना ही अच्छा है। परन्तु ईद से संबंधित स्वयं रचित अनेक बखेड़ों के कारण हिन्दुस्तान में इसको देर से पढ़ने का आम रिवाज हो गया है। फिर भी दस से लेकर ग्यारा बजे दिन तक सामान्यता ईद की नमाज़ पढ़ ली जाती है। ईद की नमाज़ पढ़ने का उचित स्थान तो नगर से बाहर मैदान या ईदगाह थी, परन्तु आज सुविधा हेतु जनसंख्या की अधिकता और नगरों के विस्तृत होने के कारण महल्लों की मस्जिदों में भी ईद की नमाज़ पढ़ने का रिवाज बढ़ गया है, फिर भी अधिक संख्या में लोग नगर की ईदगाह में नमाज़ पढ़ते हैं। ईद की नमाज़ और ख़ुत्बा समाप्त होते ही लोग एक दूसरे से गले मिलना शुरु कर देते हैं। यह बात ध्यान देने योग्य है कि यह गले मिलन की प्रथा हिन्दुस्तान की विशेषता है, मुआनक़ा (गले मिलने) का कोई धार्मिक अस्तित्व नहीं है और न इस्लामी केन्द्र में इसका प्रचलन है, कोई आश्चर्य की बात नहीं, सम्भवता मुसलमानों ने इस को अपने देशवासियों के कुछ त्योहारों की रस्मों, विशेषकर ''होली मिलन'' से अपनाया हो, जो प्रेम, हर्ष तथा उल्लास प्रकट करने का प्रतीक समझा जाता है, ईदगाह से वापसी पर लोग घरों पर ईद मिलने जाते हैं, और एक दूसरे को मिठाई अथवा मीठी वस्तु द्वारा सत्कार करते हैं, इस अवसर पर सिवईयों का ऐसा प्रचलन हो गया है कि वह ईद का एक प्रतीक बन गई है, इसका भी संबंध विशेष कर हिन्दुस्तान से है दूसरे इस्लामी देशों में किसी भी प्रकार की मिठाई एवं इत्र से सत्कार किया जाता है।

ईदुल फित्र के बाद दूसरा बड़ा इस्लामी त्योहार ईदुल अज़हा (बक़रईद) है जो ईद के दो माह बाद होता है जिसमें नमाज़ के अलावा कुरबानी भी की जाती है, इसमें सदक़–ए–फित्र नहीं दिया जाता, इसके अलावा एक अन्तर यह भी है कि ईद शव्वाल महीने की पहली तारीख़ को होती है, जबकि बक़रईद ज़िलहिज की दसवीं तारीख़ को होती है। ईदुल अज़हा के अवसर पर एक बात यह भी है कि 9 ज़िलहिज की फ़ज्र की नमाज़ के बाद से 13 ज़िलहिज की अस्र की नमाज़ तक हर फ़र्ज नमाज़ के बाद तक़बीर तशरीक़ के कलिमात बलन्द आवाज़ में पढ़े जाते हैं जिस का अर्थ निम्नलिखित हैः–

अल्लाह सबसे बड़ा है अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लाएक़ नहीं अल्लाह सबसे बड़ा है अल्लाह सबसे बड़ा है और अल्लाह ही का शुक्र अदा किया जाता है। ईदुलफ़ित्र का एक दिन और ईदुल अज़हा के तीन दिन, इन दिनों में रोज़ा रखना जाएज़ नहीं, यह दिन खाने पीने के लिए खास हैं।

ईदुल फित्र तथा ईदुल अज़हा मुसलमानों के विश्वव्यापी एवं अन्तर्राष्ट्रीय त्योहार हैं जिनमें किसी देश, जाति एवं वर्ग का अपवाद नहीं, और यही दो त्योहार है, जिनके शास्त्रीय एवं

धार्मिक मान में किसी प्रकार का मतभेद नहीं और किसी युग में भी इनके प्रति कोई आक्षेप नहीं किया गया और लगभग समस्त देशों में चाहे वह देश बहुसंख्यक हों अथवा अल्पसंख्यक उनके मनाने के ढंग और उनके व्यावहारिक तथा धार्मिक स्वरूप में कोई विशेष अन्तर नहीं, और यह उन समस्त धार्मिक क्रियाओं तथा प्रथाओं की विशेषता है जो कुरआन मजीद और हदीस शरीफ़ से प्रमाणित तथा मुसलमानों में निरन्तर एवं अनवरत रूप से चली आ रही हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर और धार्मिक स्तर पर मानव इतिहास में त्योहारों की परम्परा रही है परन्तु इस्लाम के अलावा दूसरों धार्मों में त्योहार के अवसर पर खुली छूट होती है, वैध और अवैध का अन्तर मिट जाता है, इन्सान रंग रलियों में पड़ कर सभ्यता की सीमाएं तोड़ देता है, इस्लाम अपने अनुयाइयों से शरीर और हृदय दोनों की पवित्रता चाहता है। त्योहार का अवसर यद्यपि खाने पीने और प्रसन्नता का दिन होता है परन्तु क़दम क़दम पर अल्लाह की महिमा और बड़ाई का प्रदर्शन होता है।

❖❖❖

पृष्ठ....06...का शेष

ज़रूरी समझा कि वे इस ज़िम्मेदारी को स्वीकार करें ताकि लोगों को आसानी भी हो और एक अच्छा आदर्श सामने आये, कुछ किताबों में है कि धीरे–धीरे राजा ने सारे अधिकार उन्हीं के हवाले कर दिये और खुद मुसलमान भी हो गया, अंत में यह भी बता दिया गया कि आख़िरत का बदला सबसे बढ़ कर है, दुनिया की सारी सत्ता और धन उसके आगे कोई मूल्य नहीं रखता।

5. सूखे के युग में दूर–दूर तक चर्चा हुई कि मिस्र में उचित मूल्य पर राशन मिल जाता है, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई भी पहुँचे, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने देखते ही उनको पहचान लिया मगर वे न पहचान सके, अनाज देने के बाद भाई कहने लगे कि हमारा एक और भाई है जो अब्बा जान की सेवा के लिए रुक गया है, उसका अनाज भी दे दीजिए, उन्होंने कहा यह नियम के विरुद्ध है, उसको लेकर आओ तो मैं दूंगा और अगर न लाये तो तुम्हारा झूठ सिद्ध होगा, फिर तुम्हें भी अनाज न मिलेगा। ◆◆

ईद के दिन की 13 सुन्नतें

1. सुबह सवेरे उठना। 2. गुस्ल करना। 3. मिस्वाक करना। 4. खुशबू लगाना। 5. शरीयत के मुताबिक अपने को बनाना संवारना।
6. उम्दा क़िस्म के साफ़ सुथरे जो मुयस्सर हों कपड़े पहनना। 7. ईदगाह जाने से पहले कोई मीठी चीज़ छोहारे वगैरा खाना। 8. ईदगाह जाने से पहले सदक़–ए–फित्र अदा करना। 9. ईद की नमाज़ ईदगाह में जा कर पढ़ना। 10. ईदगाह बहुत सवेरे जाना। 11. ईदगाह एक रास्ते से जाना और दूसरे रास्ते से वापस आना। 12. पैदल जाना। 13. नमाज़े ईद को जाते वक़्त धीमी आवाज़ से तकबीर पढ़ते हुए जाना–

''अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, लाइलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर
अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द''। ◆◆

पिछले अंक से आगे

इस्लामी अक़ीदे (विश्वास)

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

पुल सिरातः-

जहन्नम के ऊपर एक बहुत ही नाजुक गुज़रने की जगह है, जिस पर से हर नेक व गुनहगार को गुजरना होगा, अल्लाह तआला इरशाद फरमाता हैः—

अनुवादः—***"और तुम में से हर एक को उस पर से हो कर गुजरना होगा, आप के रब का ये आखिरी फैसला है"।***

(सूरः मरियम–71)

लोगों का गुजरना अपने अपने आमाल की बुनियाद पर होगा, अम्बिया व सिद्दीकीन, शुहदा व सालिहीन ऐसे गुज़र जाएंगे कि जैसे बिजली की चमक, कुछ लोग तेजी के साथ और कुछ लोग चलते हुए गुजरेंगे, लेकिन जो बुरे काम करने वाले हैं और जिनके लिए जहन्नम का फैसला उनके बुरे कर्मों के ज़्यादा होने की वजह से हो चुका है वो घिसट घिसट कर उस पर चलेंगे, और कट कट कर उस में गिर जाएंगे, हदीस में उस गुज़रगाह के बारे में आया है कि तलवार से ज़्यादा तेज़ और बाल से ज़्यादा बारीक़ है।

(शुअबुल ईमान— बैहकीः 367)

बुखारी शरीफ की कई हदीसों में है कि जब पुल सिरात का जिक्र आया तो सहाबा रज़ि0 ने पूछा पुल सिरात क्या है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमायाः "एक बहुत ही फिसलने वाला, चिकना रास्ता जिस पर पाँव तक न टिक सकें उस पर नोंक दार मुड़ी हुई कीलें और बड़े बड़े कांटे जिस में मुड़े हुए छोटे छोटे कांटे होंगे, जो नजद में पाए जाते हैं, जिसको "सादान" कहते हैं, ईमान वाला उस से पलक झपकते ही गुज़र जाएगा, और जैसे बिजली चमके, तेज हवा की तरह, तेज रफ़्तार घोड़ों की तरह या सवारी की तरह, तो कुछ लोग पूरी तरह से सुरक्षित नजात पा जाएंगे, और कुछ कट कर जहन्नम में गिर जाएंगे, यहाँ तक कि उन में आखिरी आदमी घिसट घिसट कर चलेगा"।

(मुसतदरक हाकिमः 3424)

एक दूसरी रिवायत में तफ़सील है कि उस दिन अल्लाह तआला ईमान वालों को उनके आमाल के ऐतबार से एक नूर अता फरमाएंगे, कुछ लोगों का नूर पहाड़ की तरह होगा, और कुछ का उससे कम, यहाँ तक कि कुछ का नूर सिर्फ पैर के अंगूठे के बराबर होगा।

(बुखारीः 6581)

उस रौशनी में लोग गुजरेंगे, उस नूर का जिक्र कुरआन मजीद में भी है, अल्लाह ने फरमाया हैः

अनुवादः ***"उस दिन आप मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखेंगे कि उनका नूर उन के सामने और उनके दाएं दौड़ता चलेगा, आज तुम्हें खुशखबरी हो ऐसी जन्नतों की जिनके नीचे नहरें जारी हैं, उन्हीं में हमेशा केलिए रहना है यही बड़ी कामयाबी है, उस दिन मुनाफिक मर्द और मुनाफिक औरतें ईमान वालों से कहेंगे जरा हमें भी देखलो, तुम्हारी कुछ रौशनी हम भी हासिल कर लें, कहा जाएगा पीछे लौट जाओ और (जा कर) रौशनी तलाश करो, बस उनके दरमियान एक दीवार आड़ कर दी जाएगी जिस में एक दरवाज़ा होगा जिस के अंदर की तरफ़ रहमत होगी और उधर उस के बाहर की तरफ अजाब होगा।"***

(अल–हदीदः 12–13)

❖❖❖

ईश्वर मानव जाति से निराश नहीं

हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी रह0

ईश्वर का मामला मानव जाति के साथ और मानव जाति का मामला मानव जाति के साथ बिल्कुल उल्टा है। ईश्वर मानव जाति से निराश नहीं, उसकी मेहरबानियां इस संसार पर बरस रही है, लेकिन हमारा मामला एक दूसरे के साथ यह बताता है कि हम मानव से निराश हैं। किसी विचारक ने कहा है कि जो बच्चा इस दुनिया में आता है वह इस बात का ऐलान करता है कि ईश्वर मानव जाति से निराश नहीं है, यदि निराश होता तो इस नस्ल में बढ़ोत्तरी नहीं करता, लेकिन इन्सान, इन्सान का गला काटता है, इन्सान से नफ़रत करता है, मानव, मानव का शोषण करता है, जोंक की तरह खून पीता है, उसे ग्राहक समझ कर लाभ उठाता है और अपने आचरण से इस बात का ऐलान करता है कि मानवता की क्षमता और उसके भविष्य से वह निराश है। ईश्वर और इन्सान के यह प्रदर्शन बराबर जारी हैं। वर्षा की एक–एक बूँद इसका ऐलान करती है कि दुनिया का पैदा करने वाला अपनी प्यासी और ज़ालिम दुनिया से अभी निराश नहीं है।

धरती में उर्वरक शक्ति है, इसकी पैदावार इस बात का ऐलान है कि ईश्वर इस धरती के वासियों से निराश नहीं। सूर्य चमकता है और वहाँ कोई स्ट्राइक नहीं, चांद बराबर, निकलता है और अपनी चाँदनी की चादर को फैलाता है, आँखों को ठंडा करता है, दिलों को भी ठंडा करता है, दिलों को भी ठंडक पहुँचाता है, यह सब इस बात का ऐलान है कि ईश्वर मानव से अभी निराश नहीं, लेकिन हमारा और आपका व्यवहार यह सिद्ध करता है कि हम मानव से निराश हैं। हम अपने आचरण व व्यवहार से इस बात का प्रदर्शन कर रहे हैं कि हमारे सामने उस इन्सान की, जो ईश्वर की कारीगरी का बेहतरीन नमूना है कोई क़ीमत नहीं है।

ईश्वर के ऐश्वर्य और उसके गढ़न की अभिव्यक्ति व प्रदर्शन हर वस्तु में है। फूल, कली, बूंद, घास का तिनका, मिट्टी के कण, पेड़ के पत्ते जिस चीज़ को भी देखिए तो मालूम होगा कि उसमें एक दुनिया है। इनमें सर्वोत्तम मानव की रचना है। पूरी सृष्टि उसकी सेवा के लिए पैदा की गई है। यह सब इस बात का ऐलान है कि इन्सान ईश्वर का प्रिय प्राणी है, लेकिन हमारी और आपकी कार्यशैली यह सिद्ध करती है कि मानव में कोई गुण नहीं हम अपने अमल (कर्म) से ख़ुदा की अदालत में अपनों ही के विरुद्ध मुक़दमा कर रहे हैं हमको दुनिया से उठा लिया जाए।

मानों हम फ़रिश्तों की उस बात की पुष्टि करना चाहते हैं कि जिसकी काट ख़ुदा ने की थी। जब मानव रचना के समय ईश्वर ने कहा था, ''मैं इस धरती पर अपना ख़लीफ़ा और नायब (प्रतिनिधि) बनाना चाहता हूँ'' तो फ़रिश्तों ने आशंका व्यक्त की थी कि क्या आप ऐसे को ख़लीफ़ा बना रहे हैं जो धरती पर बिगाड़ पैदा करेगा और ख़ून बहाएगा? जब ईश्वर ने आदम से चीज़ों के ज्ञान के बारे में प्रश्न किया तो उन्होंने ठीक प्रकार से उत्तर दिया। फ़रिश्ते जवाब नहीं दे सके। ईश्वर ने इन्सान को जिताया था, हम उसको हरा रहे हैं।

ईश्वर ने कहा तुम को मालूम नहीं मनुष्य में कैसे–कैसे गुण हैं। उससे ज्ञान की सरिता कैसे फूट निकलती है। समुद्र में वह विशालता और गहराई न होगी जो उसमें है। उसकी आँखों में प्रेम की जो चमक है उसे प्रस्तुत करने में तुम असमर्थ हो। उसके दिल में नर्मी है, कसक है, प्रेम है, उस पर दर्द की चोट लगती है। फ़रिश्तों के पास यह दौलत नहीं।

मनुष्य के पास जो सबसे बड़ी पूंजी है वह दया की पूंजी है वह प्रेम की पूंजी है। वह एक आंसू है जो मानव की आँख से किसी विधवा के सर को नंगा, किसी ग़रीब के चूल्हे को ठंडा, किसी रोगी की कराह सुनकर टपक पड़ता है। आँसू की वह बूंद जो समुद्र में डाल दी जाए तो उसे पवित्र कर दे, गुनाहों के जंगल में डाल दी जाए तो सबको जला कर रोशनी से बदल दे। फ़रिश्ते सब कुछ पेश कर सकते हैं, किन्तु आँसू की वह बूंद नहीं पेश कर सकते जो एक इन्सान दूसरे इन्सान के लिए बहाता है।

इन्सान के पास सबसे अनमोल चीज़ यह है कि वह दूसरे के दुख–दर्द से प्रभावित होता है। उसके अन्दर प्रेम की एक चिन्गारी है उसे दहकाने वाली कोई चीज़ मिल जाए तो वह दहक उठती है। फिर वह इन्सान न मज़हब को देखता है, न देश को देखता है, इन्सान इन्सान का दिल देखता है, उसके दर्द को महसूस करता है जिस प्रकार चुम्बक लोहे को खींचता है उसी प्रकार इन्सान के दिल का चुम्बक इन्सान के दिल को खींचता है।

अगर इन्सान से यह दौलत छीन ली जाए तो वह दीवालिया हो जाएगा। यदि कोई देश इससे वंचित हो जाए तो वह कंगाल हो जाएगा। अगर अमेरिका की दौलत, रूस की व्यवस्था, अरब देशों के पेट्रोल के कुएं हुन बरसाते हों, सोने और चाँदी की गंगा–जमुना बहती हो, लेकिन उस देश में प्रेम का स्रोत सूख चुका हो तो वह देश कंगाल है।

अभी इन्सान की आँख आँसू बाहाने के क़ाबिल हैं, अभी इन्सान का दिल तड़पने, सुलगने और चोट खाने के क़ाबिल है, जो दिल इस क़ाबिल नहीं है ऐसा दिल, दिल नहीं पत्थर है चाहे वह मुसलमान का दिल हो या हिन्दू, सिख, ईसाई का दिल हो। दिल तो इसलिए है कि वह तड़पे, काँपे, रोये। इसमें धरती से अधिक हरियाली, झरने से अधिक प्रवाह, सृष्टि से अधिक विशालता और बादलों से अधिक बरसने की क्षमता हैं।

जो हाथ मानवता की सेवा के लिए नहीं बढ़ता वह पंगु है। अगर इन्सान की ज़िन्दगी का उद्देश्य केवल जमा करना था तो उसके सीने में धड़कते हुए दिल के बजाए तिजोरी रख दी जाती। अगर इन्सान का काम केवल बर्बादी की योजना बनाना था तो उसके अन्दर इन्सान का दिमाग़ न रखा जाता बल्कि किसी शैतान, किसी राक्षस का दिमाग़ रख दिया गया होता।

प्रभु ने इन्सान को ऐसा दिल दिया है कि दुनिया के एक छोर में किसी को तकलीफ़ हो तो वह दूसरे छोर में तड़प उठे। जो दिल किसी का दिल दुखाये, किसी को तकलीफ़ पहुंचाये वह दिल किस गिनती के क़ाबिल है।

इस दुनिया के साथ ईश्वर का सारा मामला बताता है कि वह मानव जाति से निराश नहीं। आपका वाटर वर्क्स पानी रोक सकता है, आप का पावर हाउस बिजली रोक सकता है, तो क्या खुदा अपनी नेमतें नहीं रोक सकता? खुदा इस दुनिया को पानी भी दे रहा है और रोटी भी

शेष पृष्ठ ...18..पर

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

फ़क़ीहों का मतभेदः–

यह सही है कि मुसलमानों के पूरे शासनकाल में जिज़िया केवल कुछ शासकों ही के ज़माने में निर्धारित हुआ, अन्यथा अन्य मुस्लिम शासकों ने इसको भुलाकर ही रखना पसंद किया जो उनकी उदारता का प्रमाण है। फिर भी यह भड़काऊ बना रहा। इस भड़काऊपन में अधिकतर फ़क़ीहों का हाथ रहा। इस्लामी इतिहास का यह दुखद तथ्य है कि उलमा और फ़क़ीह बहुत कम किसी समस्या पर सहमत होना पसंद करते हैं। इसीलिए उनकी अपनी–अपनी व्याख्याओं से बहुत सी समस्याओं की प्रकृति बदल कर रह जाती है। चूंकि वह बहुत कम किसी समस्या पर सहमत होते, इसलिए विभिन्न युगों में फिक्ही समस्याओं की व्याख्याएं भी विभिन्न होती रहतीं। उदाहरण के लिए ज़ियाउद्दीन बरनी किसी आलिम या किसी मुहद्दिस का कथन नक़ल करके ग़ैर मुस्लिम प्रजा की बदहाली, बेएतबारी या उनकी मूल्यहीन का उपदेश देते रहे। सिन्ध के विजेता मुहम्मद बिन क़ासिम को हज्जाज ने जो निर्देश दिया था उसमें तो ग़ैर मुस्लिमों के साथ अपमान का व्यवहार करने और रुसवा करने की हिदायत न थी। कुछ ऐसे उलमा भी पैदा होते रहे, जो बड़े साहस के साथ किसी तरह के अपमानजनक व्यवहार के विरुद्ध विरोध प्रदर्शन करते रहे। जैसे सिकन्दर लोधी के ज़माने में कश्तर के तालाब में बड़ी संख्या में हिन्दू एकत्र होते और स्नान करते थे। सिकन्दर लोधी ने चाहा कि इस कुण्ड को नष्ट करके इस सम्मेलन को रोक दे। उस ज़माने के एक आलिम मौलाना अब्दुल्लाह से सवाल पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया कि प्राचीन रीतियों को रोकना और प्राचीन मंदिर को तोड़ना किसी तरह वैध नहीं। सिकन्दर को यह उत्तर पसन्द न आया, उसने समझा कि यह पक्षपातपूर्ण फ़तवा है, अपनी नाराज़गी प्रकट की। लेकिन उन्होंने बहुत साहस और सफ़ाई से कहा कि मैंने शरीअत का मसला बयान कर दिया। अगर शरीअत की परवाह नहीं तो फिर पूछने की ज़रूरत भी क्या थी, इस उत्तर के बाद सिकन्दर लोधी को दबना पड़ा।

दिल दुखाने से परहेज़ः–

हिन्दुओं के विरुद्ध मौलाना ज़ियाउद्दीन बरनी की आज़ाद ख्याली इस लिहाज से भी आश्चर्यजनक है कि वह चिश्ती परिवार से जुड़ कर हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के मुरीद थे। चिश्ती सिलसिले के बुजुर्गों और सभी सूफ़ियों ने यहां के वासियों के दिलों को जोड़ने में कोई कसर उठा न रखी थी। फिर उनकी शिक्षाएं भी ऐसी रहीं कि उनके यहां दिल दुखाने या इंसानों से बेपरवाही की गुंजाइश ही न थी। हिन्दुस्तान में सूफ़ीवाद पर सबसे पहली किताब कश्फुल महजूब लिखी गयी जो सूफ़ीवाद की बाइबिल समझी जाती है। उसमें एक सूफ़ी के उपदेश के लिए यह निर्देश लिखा गया कि जब एक सूफ़ी को गुदड़ी पहनाई जाए तो उससे एक साफ जनता की सेवा अवश्य करायी जाए। जनता की सेवा यह है कि वह सबको बिना किसी भेदभाव के अपने से बेहतर समझता हो और उनकी सेवा अपने लिए आवश्यक

समझता हो। लेकिन अपनी सेवा का विचार बिल्कुल न रखता हो। हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की शिक्षा यह थी कि सुलूक के रास्ते में जो अनेक बड़े गुनाह हैं, उनमें एक इंसानों को कष्ट देना भी है। हज़रत फरीदुद्दीन गंजशकर इबादत और रियाजत के बाद केवल जनता की ही सेवा की चिन्ता अधिक करते। कोई सरकारी पदाधिकारी अत्याचार करता तो उसको अत्याचार से मना करते। निर्दोषों को दण्ड से बचाते, कोई बुराई में पड़ जाता तो उसको सही रास्ते पर लगाते। उसके चरित्र को सुधारने का प्रयास करते। हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया अल्लाह की किसी रचना से द्वेष रखना सूफ़ीवाद के विरुद्ध समझते थे। वह फरमाते कि कयामत के बाज़ार में किसी सौदे की इतनी कीमत और पूछ न होगी जितनी दिलदारी और दिल खुश करने की। उनके पीर ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन गंजशकर ने उनको अपने यहां से विदा करके दिल्ली भेजा तो फरमाया, तुम एक छायादार पेड़ हो, जिसकी छाँव में जनता आराम पाएगी। ख्वाजगान–ए–चिश्त की यही कोशिश रही कि वह अपने साफ हृदय की घनी छाया में अल्लाह की सभी रचनाओं को शरण देते रहें। हज़रत शरफुद्दीन यहया मुनीरी की शिक्षा यह थी कि राजा के लिए नफ़्ली नमाज़ें और नफ़्ली रोज़े से अधिक अनिवार्य है कि वह भूखों को पेट भर खिलाए, तरह तरह के कपड़े सिलवाये, नंगों को पहनाए, उजड़े दिलों को आबाद करे, ज़रूरतमंदों की सहायता करे उनका कहना था कि अल्लाह तआला के यहाँ पहुँचने के रास्ते तो बहुत हैं लेकिन सबसे करीब का रास्ता दिलों को राहत पहुँचाना है। हज़रत अशरफ जहाँगीर समनानी की शिक्षा यह थी कि प्रजा पर अत्याचार करने से जहाँदारी और शहरयारी को नुकसान पहुँचता है। उनका यह भी निर्देश था कि प्रजा ही की देखरेख में देश के हित और दरबार की भलाई निहित रहती है। हज़रत ख़्वाजा सैय्यद मुहम्मद गेसूदराज़ ने गुलबर्गा के सुल्तान अहमद शाह बहमनी को यह शिक्षा दी कि वह ग़रीबों, कमज़ोरों, अनाथों, मजबूरों, लँगड़ों और बेवाओं की अच्छी तरह देखभाल करें। उनको नष्ट होने से बचा लेने से अधिक कोई कठिन काम नहीं।

न्यायप्रियताः–

हिन्दुस्तान के मुसलमान शासकों का सबसे अहम रवैया यह रहा था कि वह न्याय पर पूरी तरह ज़ोर देते रहे। वह पापी, शराबी होने का आरोप तो गवारा कर लेते लेकिन अत्याचारी, अन्यायी होने का आरोप किसी तरह पसन्द न करते। फख्र–ए–मुदब्बिर का कथन है कि कुतुबुद्दीन ऐबक न्याय में हज़रत उमर रज़ि0 का अनुसरण करता था। इल्तुतमिश ने घोषणा कर रखी थी कि जिस किसी पर अत्याचार हो वह उसके महल के न्याय की निक़ली हुई ज़ंजीर को हिलाए ताकि वह उसके साथ न्याय कर सके अन्यथा कयामत के दिन उनकी फ़रियाद का बोझ उसकी क्षमता सहन न कर सकेगी। ग़यासुद्दीन बलबन के बारे में इतिहासकार ज़ियाउद्दीन बरनी ने लिखा है कि वह प्रशंसा और न्यायप्रियता में भाईयों, बेटों और रिश्तेदारों का किसी भी तरह लिहाज न करता और जब तक पीड़ित के साथ न्याय न कर लेता उसके दिल को चैन न मिलता। उसकी न्यायप्रियता की कहानियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं, तारीख़ मुबारकशाही और मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी दोनों में है कि सुल्तान मुहम्मद तुग़लक ने अपने शाही महल के अन्दर

चार मुफ्ती नियुक्त कर रखे थे कि जब कोई फरियादी आता तो सुल्तान इन मुफ़्तियों से परामर्श लेता और उनको चेतावनी दे रखी थी कि यदि कोई निर्दोष उसके निर्णय के कारण क़त्ल हुआ तो उसका नाहक़ खून उनकी गर्दन पर होगा, इसलिए मुफ़्तियों से कोई भूल–चूक न होती।

स्पष्ट है कि जनता की सेवा, इंसान की आज़ादी, प्रजा पर अत्याचार करने से परहेज़, भूखों, नंगों और ज़रूरतमंदों की सहायता करने में मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम दोनों समान दायरे में होते और न्याय में तो धर्म, जाति का कोई भेद नहीं किया जाता। हज़रत शरफुद्दीन यहया मुनीरी रह0 ने सुल्तान फ़िरोज़शाह तुग़लक को इस हदीस का पूरा विवरण लिख भेजा, जिसमें अबू जहल के मुकाबले में पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल0 ने एक ईसाई की मदद की। अबू जहल ने एक ईसाई की सम्पत्ति अपने क़ब्जे में कर ली थी, उसने पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल0 के पास जाकर उस समय फ़रियाद की जब आप दोपहर की सख्त गर्मी में क़ैलूला (दोपहर के खाने के बाद थोड़ी देर के लिए झपकी लेना) कर रहे थे, आप उसी समय ईसाई के साथ अबू जहल के घर गए, उसका दरवाज़ा खटखटाया, उसको गुस्सा आया लेकिन आप उस समय तक उसके दरवाज़े से नहीं हटे जब तक ईसाई की पूरी सम्पत्ति अबू जहल ने वापस न कर दी। ईसाई को उसका एक थैला न मिला तो अबू जहल ने उसे एक बेहतर थैला ला कर दिया। रसूलुल्लाह सल्ल0 ने ईसाई से पूछा कि यह थैला बेहतर है या वह बेहतर था। तो उसने कहा यह बेहतर है। रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया, अगर तुम यह कहते कि वह बेहतर था तो मैं उस समय तक वापस न जाता जब तक मैं क़ीमत लेकर तुम्हारे हवाले न करता।

यह हदीस इस बात का खुला उपदेश है कि इस्लाम में न्याय करने में मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम का कोई भेद न हो। पीड़ित किसी धर्म या सम्प्रदाय का हो, उसके साथ न्याय होना चाहिए। हज़रत शरफुद्दीन यहया मुनीरी रह0 ने सुल्तान फ़िरोज़शाह तुग़लक को पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल0 की यह हदीसें भी लिख भेजी थीं कि जो कोई किसी पीड़ित को देखता है और वह पीड़ित उससे फरियाद करता है, लेकिन वह फरियाद नहीं सुनता तो कब्र के अन्दर उसको आग के सौ कोड़े मारे जायंगे। पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल0 ने फ़रमाया कि यह एक क्षण का न्याय 60 साल की इबादत से बेहतर है। हज़रत शरफुद्दीन यहया मुनीरी खुश रहे कि सुल्तान फ़िरोज़शाह का व्यक्तित्व पीड़ितों और परेशान हाल लोगों का शरणस्थल था।

.....जारी.....

❖❖❖

पृष्ठ....13...का शेष

दे रहा है और पूरा कारखाना मानव की सेवा में लगा हुआ है। ख़ुदा हमसे निराश नहीं हुआ, लेकिन हम अपने आचरण से क्या साबित कर रहे हैं?

क्या हम साबित कर रहे हैं कि हम इन्सान को कोई बड़ी चीज़ समझते हैं? अपने बराबर का समझते हैं? अपने शरीर का टुकड़ा समझते हैं? हमारा आचरण इन्सानी आबादी के लिए सबसे बड़ा खतरा है। इन्सान से दुश्मनी और इन्सानियत के कुचल जाने का खतरा, इन्सानियत की ख़ैरख्वाही से आँखें बन्द कर लेना। इस खतरे से देश को भी और क़ौम को भी बचाने की ज़रूरत है।

❖❖❖

ईदुलफित्र की रात इंआ़म की रात

हज़रत शैख़ुल हदीस मौ0 मु0 ज़करिया कांधेलवी रह0

फिर जब ईदुल फित्र की रात होती है तो उसका नाम आसमानों पर लैलतुल जायज़ा (इंआम की रात) से लिया जाता है और जब ईद की सुबह होती है तो अल्लाह तआ़ला फरिश्तों को तमाम शहरों में भेजते हैं वह ज़मीन पर उतर कर तमाम गलियों और रास्तों के मोड़ पर खड़े हो जाते हैं और ऐसी आवाज़ से जिसको जिन्नात और इन्सान के अलावा हर मख़लूक़ सुनती है, पुकारते हैं कि ऐ मुहम्मद सल्ल0 की उम्मत! उस रब्बे करीम की बारगाह की तरफ़ चलो जो बहुत ज़्यादा अता फरमाने वाला है और बड़ी–बड़ी गल्तियों को माफ़ फरमाने वाला है, फिर जब लोग ईदगाह की तरफ निकलते हैं तो अल्लाह तआ़ला फरिश्तों से पूछते हैं कि क्या बदला है उस मज़दूर का जो अपना काम पूरा कर चुका हो, वह जवाब देते हैं कि ऐ माबूद और हमारे मालिक! उसका बदला यही है कि उसकी मज़दूरी पूरी–पूरी दे दी जाए तो अल्लाह तआला इरशाद फरमाते हैं कि ऐ फरिश्तो! मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने उनको रमज़ान के रोज़ों और तरावीह के बदले में अपनी रज़ा और मगफिरत अता कर दी और बन्दों से खिताब फरमा कर इरशाद होता है कि ऐ मेरे बन्दो! मुझसे माँगो मेरे इ़ज़्ज़त की क़सम! मेरे जलाल की क़सम! आज के दिन अपने इस इज्तिमाअ़ में मुझ से अपनी आखिरत के बारे में जो सवाल करोगे अता करूँगा और दुनिया के बारे में जो सवाल करोगे उसमें तुम्हारी मस्लहत पर नज़र करूँगा, मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम! जब तक मेरा ख़्याल रखोगे मैं तुम्हारी लग़जिशों और गल्तियों को छुपाता रहूंगा, मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम और मेरे जलाल की क़सम! मैं तुम्हें मुजरिमों और काफिरों के सामने रुसवा और फ़ज़ीहत न करूँगा, बस अब बख़्शे बख़्शाये अपने घरों को लौट जाओ तुमने मुझे राज़ी कर दिया, और मैं तुम से राज़ी हो गया, फरिश्ते इस अज्र व सवाब को देख कर जो इस उम्मत को ईद के दिन मिलता है खुशियाँ मनाते हैं और खिल जाते हैं।

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हो, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

E-mail: *jamalnadwi123@gmail.com*

समान नागरिक संहिता: उद्देश्य कल्याण या राजनीति?

प्रो0 अतीक़ अहमद फ़ारूक़ी

देश में समान नागरिक संहिता पर राजनीति फिर गरमा रही है। लोकसभा चुनाव से पूर्व भाजपा सरकार उन तमाम मुद्दों पर कार्यवाही कर रही है जिसका सम्बन्ध मुसलमानों से है और जिसके विरुद्ध साधारणतया मुसलमान हैं। हालांकि इस कानून से केवल मुसलमान ही प्रभावित नहीं हैं बल्कि देश के आदिवासी और दूसरी अनुसूचित जनजातियाँ भी इससे प्रभावित हैं और इसके विरुद्ध हैं परन्तु भाजपा यह विचार प्रसतुत करती है कि इसका सम्बन्ध केवल मुसलमानों से है और मुसलमान ही इसको लागू करने में सबसे बड़ी बाधा हैं। देश के प्रथम समान नागरिक संहिता विधेयक को 7 फरवरी को उत्तराखण्ड विधान सभा में पूर्ण बहुमत से स्वीकार कर लिया गया और राज्यपाल की स्वीकृति प्राप्त होते ही यह कानून बन जायेगा। वास्तव में शासक दल द्वारा यह एक प्रयोग है। उसे हर वह कार्य करना है जो देश में ध्रुवीकरण में सहायता करे और जिससे हिन्दू वोट उसकी झोली में आ गिरे। अब इस बात की सम्भावना है कि देश के अन्य बी0जे0पी0 शासित राज्य इस तरह का विधेयक प्रस्तुत कर दें कि आम चुनाव तक यह मुद्दा जीवित रहे। उत्तराखण्ड विधानसभा में जो यू0सी0सी0 बिल पारित हुआ है उसमें विवाह, तलाक़, उत्तराधिकार और गोद लेने से जुड़े मामलों को शामिल किया गया है।

आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के अनुसार उत्तराखण्ड असेम्बली में प्रस्तुत यह विधेयक अनुचित, अनावश्यक और अनेकता विरोधी है जिसे इस समय राजनैतिक लाभ पाने के लिए जल्दी में लाया गया है। यह केवल एक दिखावे और राजनीतिक मतप्रचार से अधिक कुछ भी नहीं है। बोर्ड के प्रवक्ता डॉ0 सय्यद क़ासिम रसूल इलयास ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा है कि यह क़ानून केवल तीन पहलुओं पर आधारित है। प्रथम, विवाह और तलाक़, द्वितीय, उत्तराधिकार का मुद्दा और तृतीय, लिव इन रिलेशनशिप के लिए एक नई क़ानूनी व्यवस्था का विचार प्रस्तुत किया गया है, ऐसे सम्बन्ध जो निःसन्देह तमाम धर्मों के नैतिक मूल्यों को प्रभावित करेंगे। वास्तव में इस क़ानून को तीन आधारों पर अनावश्यक ठहराया गया है। पहला जो व्यक्ति भी किसी धार्मिक पर्सनल लॉ से अपने पारम्परिक मामलों को बाहर रखना चाहता है उसके लिए हमारे देश में स्पेशल मैरेज रजिस्ट्रेशन ऐक्ट का क़ानून पहले से मौजूद है। दूसरे, यह प्रस्तावित क़ानून संविधान के मूल अधिकारों के अनुच्छेद 25,26 और 29 से भी टकराता है जो धार्मिक और सांस्कृतिक स्वतन्त्रता को सुरक्षा प्रदान करते हैं। तीसरे यह क़ानून देश के धार्मिक व सांस्कृतिक अनेकता के भी विरुद्ध है जो कि इस देश की स्पष्ट विशेषता है और जिसके लिए विदेशों में हमारी प्रशंसा होती है। इस क़ानून के अन्तर्गत इस्लामी क़ानून में जो संशोधन किया है। वह नासमझी का परिणाम है। उदाहरणार्थ इस क़ानून के अन्तर्गत पिता की सम्पत्ति में पुत्र और पुत्री का हिस्सा समान कर दिया गया है जो कि शरीअत उत्तराधिकार के कानून से टकराता है। इस्लाम का

क़ानून सम्पत्ति के उत्तराधिकार के न्यायपूर्ण विभाजन पर आधारित है। परिवार में वित्तीय स्थिति के अनुसार जितनी ज़िम्मेदारी होती है सम्पत्ति में उसका उतना ही हिस्सा होता है। इस्लाम महिला पर घर चलाने का बोझ नहीं डालता। यह जिम्मेदारी पूर्णतः पुरुष की होती है। यहां तक कि घरेलू कामकाज या खाना पकाने के लिए महिला को बाध्य नहीं किया जा सकता। इसके अतिरिक्त इस क़ानून में दूसरे विवाह पर प्रतिबन्ध लगाना भी केवल प्रचार के उद्देश्य से है। क्योंकि स्वयं सरकार द्वारा उपलब्ध कराये गये डेटा से यही स्पष्ट होता है कि उसका अनुपात भी तेजी से गिर रहा है। दूसरे विवाह की व्यवस्था मनोरंजन के उद्देश्य से नहीं की गई थी बल्कि सामाजिक आवश्यकता के कारण की गई थी और उसके लिए भी अनेक शर्तें हैं जिसे पूरा किये बिना कोई दूसरा विवाह नहीं कर सकता। यदि दूसरे विवाह पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया तो इससे महिला को ही नुकसान उठाना पड़ेगा। इस स्थिति में पुरुष को मजबूरन पहली पत्नी को तलाक़ देना पड़ेगा। अनुसूचित जनजाति को पहले ही इस कानून से बाहर कर दिया गया है और दूसरी तमाम जाति विरादरियों के लिए उनके रीति–रिवाज की रिआयत रखी गई है। कुछ टीकाकारों का विचार है कि उत्तराखण्ड यू0सी0सी0 सब पर लागू किये जाने वाले एक हिन्दू कोड के अतिरिक्त कुछ नहीं है। इस विधेयक में हिन्दू अविभाजित परिवारों को छुवा तक नहीं गया है। यदि हमारी सरकार उत्तराधिकार का समान क़ानून चाहती है तो फिर हिन्दुओं को उससे बाहर क्यों रखा गया है? एक आपत्ति यह भी की जाती है कि आखिर इसमें से अनुसूचित जनजातियों को क्यों अलग रखा गया? क्या किसी एक वर्ग को एक कानून से अलग रखने से वह क़ानून सबसे लिए एक समान हो सकता है? तर्क प्रस्तुत किया जाता है कि राज्य के नीति–निर्देशक तत्व में इस तरह के क़ानून बनाने का निर्देश दिया गया है। नीति–निर्देशक तत्व में गाय काटने के विरुद्ध भी कानून बनाने का निर्देश दिया गया है। कुछ राज्यों में इस क़ानून को बना कर लागू भी कर दिया गया है लेकिन कई दूसरे राज्यों जैसे गोवा, बंगाल और उत्तर पूर्व के सूबों को इस क़ानून से मुक्त कर दिया गया है। फिर केन्द्रीय सरकार यह क्यों नहीं मान लेती कि यू0सी0सी0 को पूरे देश में लागू करना व्यावहारिक रूप से कठिन है।

वास्तव में यदि समान नागरिक संहिता लागू करना इतना आसान होता तो उसे 1950 में ही लागू कर दिया गया होता। संवैधानिक सभा ने इसकी मुश्किलात को समझ लिया था इसलिए उसने इस कार्य को स्थगित कर दिया था। यहां यह कहना भी अनावश्यक न होगा कि 2016 में भाजपा सरकार ने एक ''ला कमीशन'' बनाया था जिसने 2018 में ही कहा था कि इस समय समान नागरिक संहिता न तो आवश्यक है और न ही वांछनीय। सम्भवतः कमीशन इस निर्णय पर इसलिए पहुंचा क्योंकि समान नागरिक संहिता का मुसलमानों से भी अधिक हिन्दुओं की ओर से विरोध होने का डर था। कारण यह था कि इस क़ानून का प्रभाव मुसलमानों के साथ–साथ हिन्दुओं पर भी पड़ता क्योंकि अगर हिन्दू संयुक्त परिवार क़ानून समाप्त हो जाता और उसके टैक्स लाभ खत्म हो जाते तो उसकी प्रतिक्रिया होती। इसीलिए इस क़ानून में

शेष पृष्ठ ...40..पर

समाज से बुराईयाँ दूर कीजिए

अमतुल्लाह तस्नीम

एहसान जताना:–

यह इतनी बुरी आदत है कि इसका फायदा न दुनिया में है न आखिरत में, फिर भी औरतों में यह आदत बहुत पाई जाती है, देकर एहसान जताना। एहसान करके अपना गुलाम समझना। जबकि ऐसा देना–दिलाना सब बेकार है, इससे तो न देना बेहतर है कि बेचारे ग़रीब का एहसान के बोझ से सिर तो न झुकता, वह शर्माता तो नहीं, यह तो बहुत दुखद बात है। वास्तविकता यह है कि जो काम अल्लाह तलाआ के लिए किया जाता है तो उसमें अल्लाह से बदला मिलने की आरजू होती है और दुनिया से कोई अपेक्षा नहीं होती किन्तु जहां दुनियावी अपेक्षा हुई वहां यही होगा कि दुनिया से उसका बदला मिलने की आशा और ना मिले तो दु:ख भी होगा और ज़बान से बार बार उसका उल्लेख भी होगा। अल्लाह तआला अपने कलाम पाक में फ़रमाता है– ऐ ईमान वालो! अपनी ख़ैरात को एहसान जता कर और तकलीफ़ दे कर बर्बाद न करो।

लान–तान करना–

इसी तरह लानत (धिक्कार) करना भी बहुत ही कठोर और बेबाकी (दुस्साहस) की बात है औरतें बहुत ज़्यादा लानत करती हैं और फटकार लगाती हैं, जबकि यह अल्लाह और रसूल सल्ल0 के यहां बहुत ही बुरी बात है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: ताने देने वाला, लानत करने वाला, फहश बकने वाला, और जुबान दराज़ ईमान वाला नहीं हो सकता (यानी यह ईमान वाले के गुण और स्वभाव नहीं हैं)।

एक हदीस में हज़रत अबूदाऊद रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब कोई किसी पर लानत करता है तो वह लानत आकाश पर जाती है, आकाश के सब दरवाजे बन्द हो जाते हैं, फिर वह दाएं बाएं फिरती है और जब कहीं रास्ता नहीं पाती तो जिस पर लानत की गई थी अगर वह लानत के लायक होता है तो उस पर पड़ती है वरना पलट कर वह लानत करने वाले पर आ पड़ती है।

लानत करने वालों को एक बड़ी महरूमी का सामना करना पड़ेगा वह महरूमी यह होगी कि वे कयामत के दिन किसी की सिफारिश न कर सकेंगे और न गवाह बन सकेंगे।

क़स्में खाना–

क़स्में भी आज कल आम हो गई हैं, इस का महत्व दिलों से बिल्कुल समाप्त हो गया है, बात बात पर कसम खाना अब बाएं हाथ का खेल है। अपने ऊपर दिन भर में न जाने कितनी कस्में चढ़ा लेती हैं, फिर इसकी तनिक चिंता नहीं कि कफ़्फ़ारा अनिवार्य हुआ या नहीं। अफ़सोस है कि कितने गुनाह ऐसे हैं जो दिन रात हमसे होते रहते हैं और हमें कुछ ख़बर नहीं, अल्लाह का फरमान है।

अल्लाह तुम्हारी व्यर्थ कस्मों को नहीं पकड़ता, किन्तु वह तुम्हारी उन कस्मों पर पकड़ करता है जिनको तुम मज़बूत कर लो, तो इसका कफ़्फ़ारा दस निर्धनों को मध्यम श्रेणी का खाना देना है, जैसा तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या उनको कपड़े पहनाना है और अगर यह प्राप्त न हो तो तीन

रोज़े रखे। जब तुम कसम खा बैठो तो अपनी कसमों की रक्षा करो।

मुसलमानों की माँ हज़रत आइशा रज़ि0 कहती हैं कि यह आयत उन लोगों के बारे में उतरी जो हर बात पर वल्लाह (अल्लाह की क़सम) बिल्लाह (अल्लाह की क़सम) कहा करते हैं। (बुख़ारी शरीफ)

अल्लाह तआला का यह फ़रमान है और यहां यह हालत है कि बात–बात पर साहसपूर्वक कस्में खाती हैं और कफ़्फ़ारे की चिन्ता तो क्या परवाह भी नहीं, मुसलमानों की माँ हज़रत आइशा रज़ि0 ने एक बार अपने भाँजे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि0 से नाराज़ हो कर क़सम खाई कि उससे बात न करूंगी, फिर मनाने की सबने बड़ी कोशिश की और सिफ़ारिश भी की और उन्होंने भांजे की बेक़रारी देखी और इस हदीस से डरीं भी कि ''जो किसी मुसलमान से तीन दिन से अधिक बोल– चाल बंद रखेगा और इसी हालत में मर जाएगा वह दोज़ख़ में जाएगा'' अतः उन्होंने क़सम तोड़ दी और उसके कफ़्फ़ारे में चालीस गुलाम आज़ाद किये, फिर भी जिस समय क़सम तोड़ने का ख़याल आता था तो इतना रोती थीं कि आँसुओं से आँचल तर हो जाता था, और अब तो क़सम खाना और तोड़ देना कोई बात ही नहीं, वास्तविकता यह है कि न अल्लाह का आदर दिलों में बाक़ी रहा है और न उसके नामों का महत्व।

कसम खाने के बाद भलाई की बात देख कर उसको अपनाने का आदेश हदीस में आया है, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन समुरह बिन जुंदुब रज़ि0 कहते हैं कि मुझसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अगर तुम किसी बात पर क़सम खा लो फिर उससे बेहतर बात देखो तो उसको अपना लो और क़सम का कफ़्फ़ारा दे दो।

(बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ)

और इसी प्रकार अल्लाह के सिवा दूसरे की क़सम खाने की मनाही हदीस में आई हैः हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 कहते हैं कि मैंने एक व्यक्ति को काबे की क़सम खाते सुना तो कहा अल्लाह के सिवा किसी की क़सम न खाओ, मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि जिसने अल्लाह तआला के अलावा किसी की क़सम खाई तो उसने कुफ्र किया।

(तिर्मिज़ी शरीफ़)

झूठ बोलना–

झूठ भी आज कल इतना अधिक प्रचलित हो गया है कि कला बन चुका है, बात– बात पर झूठ बोलना और झूठी कस्में खाना और बहुत ज़्यादा बढ़ा चढ़ा कर किसी बात को पेश करना खेल– तमाशा हो गया है, जबकि झूठ ऐसी चीज़ है जो सारी बुराईयों की जड़ है, हर बुराई की शुरुआत है।

एक व्यक्ति ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि मुझमें यह आदतें हैं, चोरी, शराब और जुवा। आपने फ़रमाया झूठ छोड़ दो, वह चला गया, लेकिन दिल में सोचता था कि एक झूठ छोड़ देने से दूसरी बुराइयाँ कैसे जा सकती हैं, रात आई चोरी करना चाहा लेकिन तुरन्त यह ध्यान आया कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूछेंगे तो झूठ बोलना पड़ेगा, यह सोच कर चोरी का इरादा छोड़ दिया। फिर शराब, फिर जुवे का विचार हुआ और हर बार इसी डर ने रोका की हुजूर सल्ल0 पूछेंगे तो झूठ बोलना पड़ेगा। अतः एक झूठ के डर से उसकी सब बुराइयाँ छूट गईं।

हक़ीक़त में झूठ ऐसी ही चीज़ है कि जो इससे न बचा वह किसी बुराई से न बचा, फिर

झूठ बोलने वाले पर विश्वास नहीं हो सकता, मगर अब यह हाल है कि विश्वास समाप्त हो जाए, अपमानित होना पड़े, चाहे कुछ हो लेकिन झूठ न छूटे क्योंकि वह ऐसी कला है जिससे इस समाप्त हो जाने वाली दुनिया की हर चीज़ प्राप्त होती है, अपमान हो तो हो, लोगों का विश्वास जाए तो जाए कुछ दिन या कुछ घण्टे का फायदा तो हो गया।

झूठे व्यक्ति का अंजाम बड़ा खराब है, एक हदीस में सच्चे व्यक्ति और झूठे व्यक्ति के अंजाम को इस प्रकार बयान किया गया हैः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 कहते हैं कि अल्लाह के पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि सच्चाई भलाई की ओर मायल करती है और भलाई जन्नत में ले जाती है और आदमी सच बोलते बोलते अल्लाह के यहां बड़ा सच्चा और सत्यवादी गिना जाता है, और झूठ गुनाह की ओर आकृष्ट करता है और गुनाह दोज़ख़ में ले जाता है और आदमी झूठ बोलते—बोलते अल्लाह के यहां बड़ा झूठा लिख लिया जाता है।

(बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ)

और हदीस में यह भी आया है कि झूठ बोलना मुनाफ़िक़ (कपटी) की एक पहचान है, और पवित्र कुर्आन में झूठ बोलने वालों पर लानत भी की गई है। इसलिए इस बुराई से बहुत ज़्यादा बचने की ज़रूरत है।

(तिर्मिज़ी शरीफ)।

शिर्क व बिदअत और रीति—रिवाजः—

यह रोग भी विशेष रूप से औरतों का है, वे इसमें इतना अधिक ग्रस्त हैं कि फर्ज़ इबादत क़ज़ा हो जाये लेकिन शिर्क व बिदअत का कोई हिस्सा न छूटे, जबकि शिर्क व बिदअत के बारे में कुर्आन व हदीस में ऐसी वईदें (धमकियाँ) आईं हैं कि दिलवाले थर्रा उठें, मगर उनसे डरे कौन? मस्जिदें सूनी पड़ी हैं कबरों पर सज्दे ही सज्दे हो रहे हैं, अल्लाह जो पैदा करने वाला है और सारे जहान का मालिक है उसको भूल गये और बुज़ुर्गों पर दिल व जान से कुर्बान, उनसे मांगा भी जा रहा है, उनके नाम की नज़्र व न्याज़ भी हो रही है और पाँच वक्त की नमाज़ जो फ़र्ज़ है वह अदा नहीं हो सकती, बिदअत को लीजिए तो कूँडे भरे जाते हैं, शबेबरात के हलवे का नाग़ा न हो, मोहर्रम में खिचड़ा जरूर पके, ग्यारहवीं का पुलाव—जर्दा पकाया जाए मगर बकराईद के दिन जो कुर्बानी वाजिब है उसके लिए पैसा नहीं, अक़ीक़े के लिए एक बकरी मुश्किल है, हमने माना कि इसमें मर्दों का भी हाथ है, लेकिन अगर औरतें इस काम को छोड़ दें और ज़िद कर लें तो सब मर्द सीधे रास्ते पर आ जाएं मगर यह सारी खराबियाँ औरतों ही की ज़ात से हैं औरतें ही अधिकतर इस मामले में पकड़ी जाएंगी।

शिर्क ऐसा गुनाह है कि इसके बारे में अल्लाह का फ़रमान है कि अगर अल्लाह तआला चाहेगा तो सारे गुनाहों को माफ़ कर देगा, लेकिन शिर्क न माफ़ करेगा और बिदअत के बारे में हुजूर सल्ल0 का इरशाद है कि ''जिसने दीन में कोई नई बात आविष्कार की वह हम में से नहीं है।'' एक हदीस में है कि हुजूर सल्ल0 हौज़े कौसर पर लोगों को पानी पिलाएंगे और बिदअत करने वालों से मुँह फेर लेंगे।

हज़रत जाबिर रज़ि0 कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 फरमाते थे कि बेहतर कलाम अल्लाह की किताब है और बेहतर तरीक़ा मुहम्मद सल्ल0 का तरीक़ा है और बुरे काम नई बातें हैं और हर बिदअत गुमराही है।

(मुस्लिम शरीफ)

अल्लाह तआला ने साफ़ फ़रमा दिया है:–

हमने किताब में किसी प्रकार की कमी नहीं की। आज मैंने तुम्हारे लिए दीन को मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए दीन के रूप में इस्लाम पर राज़ी हो गया।

इसी प्रकार रीति–रिवाज की पाबंदी है। रस्म ज़रूर अदा करें चाहे चोरी करें, डाका डालें, रिश्वत लें, सूद लें लेकिन रस्मों में फ़र्क़ न आए, आज रस्म व रिवाज की वजह से घरानों के घराने तबाह व कंगाल हो गए लेकिन इस तबाही पर भी आँखें नहीं खुलीं।

शगुन व भविष्यवाणी:–

औरतें ही इस बीमारी में भी ग्रस्त हैं, उल्लू बोला तो वे सहमीं, बिल्ली–कुत्ता रोया तो डरीं, कव्वा सिर पर बैठा तो समझीं कि बस अब मौत है, कव्वा दीवार पर बैठा व बोला तो शगुन लिया, टोने–टोटके, तावीज़–गण्डे, मान–दान, खुलासा यह कि उनकी पूरी ज़िन्दगी इसी की भेंट चढ़ जाती है। फिर जैसा अक़ीदा होता है वैसा ही अल्लाह कर भी देता है। हदीसे कुदसी है कि :– हम बन्दे के गुमान के साथ हैं। (जैसा वह गुमान करता है वैसा ही हम मामला करते हैं)।

एक मजलिस में हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया मेरी उम्मत में सत्तर हज़ार आदमी बेहिसाब व किताब जन्नत में जाएंगे। लोगों को हैरत हुई कि वे कौन लोग हैं? हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया :–

यह वे लोग हैं जो फूँक झाँड़ नहीं करते और न करवाते हैं, और न शगुन लेते हैं और अपने रब पर भरोसा करते हैं।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने अप–शगुन को अच्छा नहीं समझा, अबू दाऊद शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 बुरा शगुन नहीं लेते थे।

और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया बुरा शगुन लेने की कोई हक़ीक़त नहीं।

(बुखारी व मुस्लिम शरीफ़)

फ़ैशन परस्ती–

बारीक कपड़ा तो इतना प्रचलित हो गया है कि जिसको देखो वही पहने हुए है, हर समय नये फैशन बदल कर और पतला से पलता कपड़ा पहन कर बे धड़क बिना बुर्का के घर से निकलना, हर समय बाज़ारों का चक्कर लगाना, गली कूचों की ख़ाक छानना, नये अन्दाज़ से सड़कों पर चलना, बेहयाई बेपरदगी के साथ गैर मर्दों से मिलना, हँसती खेलती एक ओर से आना और दूसरीओर से निकल जाना, इन्हीं औरतों के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया–

वे औरतें जो ज़ाहिर में कपड़े पहनती हैं मगर हक़ीक़त में नंगी हैं मायल (आकृष्ट) करने वालियां, मायल होने वालियां, उनके सिर बुख्ती ऊँट के झुके हुए कोहान की तरह हैं, ऐसी औरतें न जन्नत में जाएंगी, न उसकी खुशबू पाएंगी जबकि उसकी खुशबू दूर से पहुंचती है।

ख़ुदा मालूम ज़माना कितनी करवटें बदल चुका है, क्रांति पर क्रांति आईं, लाखों बस्तियाँ उजड़ गईं, सैकड़ों मकान ध्वस्त हो गये, सैकड़ों बस्तियां भूकंप से उलट–पलट गईं, मगर वाह रे दिल, इसमें बदलाव न आया, यह अपनी जगह अटल है, वही गुनाह और अल्लाह रसूल की बात न मानना, वही अल्लाह को भुला देना, वही शौक़–ज़ौक़ वही सैर–सपाटे।

अल्लाह हमारे समाज को इन बुराइयों से बचाए, और हम सब को अपने घरों की ख़बरगीरी की तौफ़ीक़ अता फरमाए। आमीन।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: एक बड़े कस्बे के लोगों ने कमज़ोर, बीमार और बूढ़े लोगों के लिए ईद की नमाज़ का कस्बे ही की मस्जिद में इंतिज़ाम किया और जो कमज़ोर और बीमार आदि नहीं थे उनके लिए आबादी से बाहर ईदगाह में, क्या ऐसा इंतिजाम करना सही है, क्या इनकी नमाज़ हो जाएगी?

उत्तर: ईद की नमाज़ ईदगाह में पढ़ना सुन्नते मुवक्किदा है, लेकिन कमज़ोरों, बीमारों के लिए जो ईदगाह न जा सकें उनके लिए कस्बे या शहर की मस्जिद में ईद की नमाज़ का इंतिज़ाम करना सही है और नमाज़ दुरुस्त होगी।

(रद्दुल मुहतार 1/77)

प्रश्न: जिन लोगों ने रमज़ान में सदक़—ए—फित्र अदा नहीं किया बल्कि ईद के दिन भी अदा नहीं किया तो क्या वह बाद में अदा कर सकते हैं या यह ज़िम्मे से उतर जाएगा?

उत्तर: सदक़—ए—फित्र रमज़ान और ईद के बाद भी अदा किया जा सकता है, ईद का दिन गुज़रने के बाद भी उसकी अनिवार्यता खत्म नहीं होती बल्कि जितनी जल्द हो सके ईद के बाद भी अदा करदे।

प्रश्न: कुछ लोग ईदगाह लेट पहुँचे, उनकी ईद की नमाज़ छूट गई, उन लोगों ने उसी ईदगाह में दोबारा जमात से नमाज़ पढ़ी, क्या इन लोगों की नमाज़ हुई या नहीं?

उत्तर: अगर ईदगाह में जमात छूट गई तो दूसरी जगह जहां नमाज़ मिलने की उम्मीद हो वहां जा कर पढ़े, अगर ऐसा नहीं किया और वहीं दोबारा जमात करके नमाज़ अदा की तो नमाज़ तो हो जाएगी, लेकिन यह मकरूह और नापसंदीदा है।

(रद्दुल मुहतार 1/783)

प्रश्न: एक व्यक्ति ट्रेन से सफ़र करने की नीयत से घर से चला लेकिन अभी स्टेशन ही पर है कि नमाज़ का वक़्त आ गया, स्टेशन आबादी से मिला हुआ है वह व्यक्ति अभी कस्र नमाज़ पढ़ेगा या पूरी नमाज़ पढ़ेगा।

उत्तर: सफ़र की नीयत से जब शहर से बाहर हो जाए और 48 मील अर्थात 78 कि0मी0 या उससे दूर सफर करने का इरादा हो तो तब कस्र की इजाज़त होगी, शहर के अन्दर स्टेशन पर कस्र की इजाज़त न होगी।

(रद्दुल मुहतार 2/599)

प्रश्न: लाइट और पानी बिना मीटर के इस्तेमाल करना या मीटर रोकने के लिए तरकीब करना कैसा है?

उत्तर: मीटर के बिना लाइट और पानी हासिल करना या मीटर को रोकना चोरी करने में दाखिल है और चोरी इस्लाम में सख़्त गुनाह है।

(सही बुखारी—6782)

प्रश्न: अगर किरायेदार मकान मालिक से यह कहे कि जब तक हम मकान में रहना चाहेंगे, मकान खाली न कराना और न किराया बढ़ाना, यह शर्त इसलिए लगा रहे हैं कि मकान मालिक ने उससे कर्ज लिया है, प्रश्न यह है कि किरायादारी में इस क़िस्म की शर्त लगाना क्या सही है?

उत्तर: मकान खाली न कराने और किराया न बढ़ाने की शर्त सही नहीं है, इससे किरायादारी का मामला फासिद यानी सही नहीं होता है।

(फतावा हिदीया 4/442)

प्रश्नः सद–कए–फित्र किन लोगों पर वाजिब है?और उसकी मिक्दार क्या है?

उत्तरः आक़िल व बालिग (बुद्धिमान तथा व्यस्क) मुसलमान जो ईदुल फित्र के दिन अपनी बुन्यादी (मौलिक) ज़रूरतों के अलावा 612 ग्राम चाँदी या उसकी कीमत का मालिक हो उस पर सद–कए–फित्र अपनी और अपने ना बालिग बच्चों की तरफ से अदा करना वाजिब है। (फतावा हिन्दीयाः1/191)

सद–कए–फित्र की मिक्दार गेहूँ में, अहनाफ के नज़दीक आधा साअ़ गेहूँ है जो नई तौल में एक किलो 590 ग्राम बनता है बेहतर है एक किलो 600 ग्राम अदा करें। (देखें जवाहिरुल फिक्हः1/428) इसमें शक नहीं कि सद–कए–फित्र की मिक्दार में लोगों की अलग अलग तहकीक है जिस का जिस पर इतमीनान हो उसको अपनाये आपस में लड़ें नही।

प्रश्नः सद–कए–फित्र किन लोगों को दिया जायेगा?

उत्तरः सद–कए–फित्र जकात के हकदारों (गरीब मुसलमानों) को दिया जायेगा गैर मुस्लिम को नहीं दिया जा सकता। (दुर्रुल मुख़्तारः3/325)

प्रश्नः जो लोग बीमारी या किसी और उज्र के सबब रोजा नहीं रख सके तो क्या उन पर भी सद–कए–फित्र वाजिब है?

उत्तरः अगर वह साहिबे निसाब (मालदार) हैं तो उन पर सद–कए–फित्र वाजिब है चाहे उन्होंने रोजा न रखा हो।

(देखिए रद्दुल मुहतारः 2/74)

प्रश्नः क्या बीवी का सद–कए–फित्र उसके शौहर पर वाजिब है?

उत्तरः बीवी अगर साहबे निसाब है तो जिस तरह उस पर अपने माल की जकात अदा करना फर्ज है उसी तरह अपना सद–कए–फित्र वह खुद अदा करेगी अलबत्ता अगर शौहर उसकी तरफ से अदा कर देगा तो अदा हो जायेगा।

(अलमुगनीः 2/59, 60)

प्रश्नः ईदुल फित्र की नमाज की शरई हैसियत क्या है, यह वाजिब है या सुन्नत?

उत्तरः ईदुल फित्र की नमाज वाजिब है और यह हर आक़िल बालिग़ मुसलमान मर्द जो बीमार न हों नाबीना न हो सफर में न हो उस पर वाजिब है औरतों पर वाजिब नहीं है।

(हिदायाः 1/172)

प्रश्नः ईदुल फित्र के दिन नमाज से पहले कुछ खाने का क्या हुक्म है?

उत्तरः ईदुल फित्र के दिन नमाज़ से पहले खजूर या कोई मीठी चीज खाना सुन्नत है। ईदुल फित्र के दिन नबीए करीम सल्ल0 ईदगाह जाने से पहले कुछ मीठा खा लेते थे।

(बुखारीः 1/130)

प्रश्नः अगर किसी की ईद की नमाज़ छूट जाये तो उसकी कजा करेगा या नहीं?

उत्तरः ईदैन की नमाज़ों की कजा नहीं है अलबत्ता अगर अपनी ईदगाह में नमाज हो गई हो और दूसरी ईदगाह में नमाज मिल सके तो वहां जाकर अदा कर ले।

(दुतर्रुल मुख़्तारः 1/561)

प्रश्नः जकात किन लोगों पर फर्ज है?

उत्तरः हर आकिल बालिग मुसलमान मर्द हो या औरत जो 612 ग्राम चांदी या उसकी कीमत का मालिक हो उसको साहिबे निसाब कहते हैं उस पर जकात फर्ज है अलबत्ता जब उसके माल पर साल गुज़र जायेगा तब जकात देना होगी। बेहतर यह है कि रमजान का महीना जकात के हिसाब के लिए मुकर्रर करे और रमजान ही में जकात अदा करदे।

प्रश्नः जकात किस हिसाब से निकाली जाती है?

शेष पृष्ठ ...29..पर

मानव सेवा

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

पवित्र कुरआन में है ''तंगी हो या आसानी, अल्लाह के लिए अपने हाथ कभी न रोके (सूरः आले इमरान) इसी आयत को ध्यान में रखकर शाह रफीउद्दीन रह0 अमल करते थे अर्थात अल्लाह के बन्दों पर खुले हाथ खर्च करते थे। ये वही शाह रफीउद्दीन हैं जिन्होंने उर्दू भाषा में पवित्र कुरआन का सर्वप्रथम अनुवाद किया था।

उनसे जुड़ा एक किस्सा है कि एक बार वह घर के बाहर चबूतरे पर चटाई बिछा कर बैठे थे। इतने में एक मांगने वाला आ गया चूंकि देने के लिए उनके पास कुछ नहीं था तो जिस चटाई पर बैठे थे, वही फक़ीर को उठा कर दे दिया।

अब तो हालात बदल गये हैं, अक्सर मांगने वाले इसे धंधा बना बैठे हैं और देने वाला भी उसकी नौटंकी समझ रहा है। लेकिन नुकसान वास्तविक ग़रीब का हो रहा है। इसे बदलना चाहिए। आज भी देश में करोड़ों लोग गरीबी रेखा के नीचे जी रहे हैं और दो जून की रोटी कायदे से मयस्सर नहीं है उनके सर पर छत नहीं है ढंग के कपड़े नहीं हैं, जबकि अधिकतर जगहों पर सरकारी फाइलों में मामला चकाचक है, बकौल अदम गोंडवी–

तुम्हारी फाइलों में गाँव का मौसम गुलाबी है
गमर ये आँकड़े झूठे हैं ये दावा किताबी है
तुम्हारी मेज़ चाँदी की तुम्हारे जाम सोने के
यहाँ जुम्मन के घर में आज भी टूटी रकाबी है

खैर बात रफीउद्दीन साहब की हो रही थी उनसे जुड़ा एक किस्सा ये है कि एक बार वह मुहल्ले की बड़ी बूढ़ी औरतों का सौदा–सल्फ लेने बाज़ार गये। एक–एक सामान खरीदा और रूमाल व गमछे में बाँधने लगे लेकिन फिर भी पूरा सौदा उसमें समा न सका। शेष सौदा अपने कुर्ते के दामन में बाँध लिया, फिर भी एक सामान बचा रहा तो झट से टोपी उतारी और उसमें सौदा रखकर घर की ओर चल पड़े।

रास्ते में एक शुभचिंतक ने देखा की हज़रत का पूरा वजूद ही सौदा–सल्फ की पोटलियों से अटा पड़ा है। यहां तक कि टोपी भी सर से उतर कर थैली बन चुकी है। उस शुभचिंतक को बड़ी गैरत आई और कहा हज़रत! ये टोपी में क्या है? कहा दाल है। उसने कहा, इसमें की दाल मुझे दे दीजिए मैं अपने रूमाल में बाँध कर पहुँचा दूँगा, आप टोपी लगा लीजिए। इसपर शाह रफीउद्दीन ने बड़ी मार्के की बात कही कि नहीं तुम फिक्र न करो मुसलमान की हर चीज़ काम में आनी चाहिए।

अन्तिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 के साथ बाज़ार गये। आप सल्ल0 ने बाज़ार से कुछ सौदा लिया। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 ने चाहा कि वह सामान उठा लें, तो इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा, जिसका सामान हो उसी को उठाना चाहिए।

आज तो मामला अजीब हो गया है, थोड़ा किसी ने इज़्ज़त क्या दी या वह साहिब मन्सब क्या हुआ कि लगे अपना बोझ दूसरों पर डालने। ये बहुत ग़लत बात है। हाँ! किसी की इज़्ज़त व अदब में कोई किसी का बोझ उठा ले तो ये अलग बात है बल्कि सौभाग्य की बात है। हदीस और इतिहास की किताबों में है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब घर के लिए सामान लेने बाज़ार जाते तो केवल अपना ही नहीं बल्कि मुहल्ले की बड़ी बूढ़ियों का भी सौदा–सल्फ ला दिया करते थे। ◆◇◆

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

इस्लाम की औरत पर नवाजिशें:–

आइए अब देखें कि इस्लाम में औरतों का क्या मक़ाम है और उनके लिए शरई कानून में कैसी कैसी रियायतें दी गई हैं, औरत के बारे में कुरआन मजीद की सूरः निसा आयत न0–1 (ये आयत निकाह के खुतबे में पढ़ी जाने वाली आयतों में से एक है) में मानवजाति की समानता का "उस (अल्लाह) ने तुमको एक जान से पैदा किया और उसी जान से उस का जोड़ा पैदा किया" के शब्दों में साफ़ ऐलान कर दिया गया कि औरत और मर्द दोनों एक ही जान से पैदा किए गए हैं, इसलिए दोनों एक ही जिंस से हैं, ऐसा नहीं है कि औरत किसी और प्रजाति से हो, (जैसे जानवर हो) और मर्द किसी दूसरी प्रजाति से, बल्कि दोनों मानवता के रिश्ते से बराबर हैं, इसी तरह हदीस में "औरतें और मर्द एक ही तरह के हैं" (अबू दाऊद, पृष्ठ–31, जिल्द–1) फरमा कर इसी को और स्पष्ट कर दिया गया, लिहाजा इस्लाम के सारे हुक्मों में– लैंगिक और प्राकृतिक अंतर का लिहाज करते हुए दोनों के लिए समानता बरती गई है बल्कि इस्लाम के सभी कानूनों पर अगर गहरी नजर डाली जाए तो महसूस होता है कि औरतों को कुछ ज़्यादा ही रियायतें दी गई हैं, अरब जाहिलीयत में लड़कियों की पैदाइश बड़े ऐब की बात समझी जाती थी, इसके मुकाबले में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो हिदायतें दीं, मसलन फरमाया–

अनुवादः– "जो शख्स लड़कियों की बेहतरीन तरीके से सरपरस्ती करे (तर्बियत दे) और अच्छा बर्ताव करे वो जहन्नम में न जाएगा ।"

(सहीह बुखारी,जिल्द 2, पृष्ठः 887)

एक और हदीस में यूं फरमाया–

अनुवादः– "जिसकी तीन बेटियाँ या तीन बहनें या दो बेटियाँ या दो बहनें हों और उनकी अच्छी परवरिश करे और उनके बारे में अल्लाह तआला से डरता रहे तो उस के लिए जन्नत है" ।

(तिरमिजी, जिल्द 2, पृष्ठ 13–14)

एक और रिवायत में ये शब्द हैं: "जिसने दो लड़कियों की परवरिश की तो मैं और वो जन्नत में इस तरह से दाखिल होंगे, (अपनी दो उंगलियों से इशारा किया)"।

(तिर्मिजी, जिल्द 2, पृष्ठ 13)

यानी जो शख्स दो–तीन बहनों या लड़कियों की बेहतरीन तरीके पर तर्बियत करे और किसी तरह की ज़्यादती न करे वो जन्नत में जाएगा, और अल्लाह के रसूल से इतना करीब होगा जितना एक हाथ की दो बराबर की उँगलियाँ, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस हर्षवर्धक बयान के बाद भला कौन सच्चा मुसलमान होगा जो लड़कियों और बहनों की परवरिश में कोताही करे, और रुचि न ले । इन निर्देशों का ये असर हुआ कि लड़कियां उसी अरब क्षेत्र में जहां जिंदा दफन की जाती थीं "करीमा" (यानी सम्मानित महिला) कहलाई जाने लगीं। और इस से भी आगे पढ़ कर इस लिंग के साथ अच्छा बर्ताव करने के लिए कई अंदाज से हुक्म दिया गया, मिसाल के तौर पर कुरआन

मजीद की (सूरह अल–निसा, आयत 19) में फरमाया–

अनुवादः– "औरतों के साथ भले तरीके से जिंदगी गुजारो"। और हदीस में फरमाया–

अनुवादः– "औरतों के साथ बेहतरीन बर्ताव के बारे में मेरी सलाह मानो"। बल्कि इसी के साथ ये भी हिदायत दी कि औरतों से अगर कोई तकलीफ भी पहुंचे तो ये खयाल कर के कि उनमें बहुत सी खूबियाँ भी हैं, नजरंदाज कर जाओ । गौर की जिए बयान का ये अंदाज कितना प्रभावी है, ये हदीस के शब्द हैं–

(सहीह मुस्लिम,मिशकात, जिल्द 2, पृष्ठ– 280)

हक़ीक़त में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ये फरमान लिया गया है कुरआन मजीद से।

(सूरह अल–निसाः 19)

अनुवादः– "अगर वो तुम को ना पसंद हों तो हो सकता है कि तुम एक चीज को ना पसंद करो और अल्लाह उसके अंदर कोई बड़ा फायदा रख दे"। एक हदीस में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया–

अनुवादः– ''मुकम्मल ईमान उस शख्स का है जो अच्छे अखलाक में उत्कृष्ठ हो और तुम में सबसे अच्छा वो शख्स है जो अपनी औरतों के लिए अच्छा हो।

(तिर्मिजी, जिल्द 1, पृष्ठः138)

इन्हीं आयतों और हदीसों की बुनियाद पर इमाम गज़्जाली (रह0) ने क्या खूब बात कही–

अनुवादः– औरत के साथ अच्छे बर्ताव करने के हुक्म का तकाजा सिर्फ ये नहीं है कि मर्द औरत को तक्लीफ न पहुंचाए बल्कि उसके अंदर ये भी दाखिल है कि अगर औरत की तरफ से कोई तक्लीफदेह बात पेश आए तो उसे बर्दाश्त करे, इमाम गज़्जाली ने ये भी लिखा है (सहीह हदीसों में ये वाकिया मौजूद है) कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वफात के बिल्कुल करीब जबकि ज़बाने मुबारक बिल्कुल साथ नहीं दे रही थी जो चंद अहम नसीहतें उम्मत को फरमाईं, उन में औरत के साथ बेहतर बर्ताव करने और इस बारे में अल्लाह से डरते रहने की भी थी।

(इहया–ए–उलूमिद्दीनः 37–38, जिल्द 2)

औरत के खर्चेः–

औरत के साथ बेहतर बर्ताव करने, उसके साथ मान–सम्मान और दिलजोई का मामला करने का हुक्म उसकी लैंगिक कोमलता के लिहाज और रियायत की वजह से ही है, क्योंकि नाजुक चीज की रियायत ज़्यादा होती है, एक हदीस में उन्हें "(शीशे की बोतलें) फरमाया गया, मानो इस तरह उनकी कोमलता को आखिरी हद तक स्वीकार किया गया है, सहीह बुखारी (जिल्द 2, पृष्ठः 917) में है– इसी बुनियाद पर उसे माल कमाने की परिश्रम से बचा लिया गया, और उसका खर्च किसी न किसी मर्द के जिम्मे कर दिया गया, शादी से पहले बाप पर, बाप न होने या उस के खर्चे बर्दाश्त करने के लायक न होने की सूरत में विरासत के नियमानुसार दादा, चाचा,भाइयों वगैरह पर, शादी के बाद पति पर, पति से अलगाव की स्थिति में इददत की अवधि के सारे खर्चे पति के जिम्मे, दुधमुँहे बच्चे की मौजूदगी में इद्दत के बाद भी जब तक बच्चा माँ का दूध पीता रहे, उसके और बच्चे के खर्चे भी उसके पूर्व पति पर ही हैं, इद्दत के बाद (दुधमुँहा बच्चा न होने की स्थिति में) औलाद पर, औलाद न हो तो फिर शादी से पहले की तरह बाप या दूसरे रिश्तेदारों पर जरूरी होते हैं, जिन पर खर्चे हैं वो स्वैच्छिक नहीं बल्कि उन पर वाजिब होते हैं ।

(दुर्रे मुख्तार, उसकी शरह रददुल मुहतार, जिल्द 2, पृष्ठः 643–689)

औरत के अधिकार :–

ऊपर की तफसील से इस्लाम में औरत के सम्मान व इज्जत और अधिकारों का अनुमान लगा लेना मुश्किल न होगा, उसके बाद अब एक झलक हम उसके अधिकारों की दिखाते हैं, औरत बालिग होने के बाद (मर्द ही की तरह) अपने जान–माल, निकाह, आर्थिक लेन देन वगैरह के बारे में शरई कानून के लिहाज से पूरी तरह स्वाधीन होती है, अपने माल की पूरी तरह मालिक होती है, जिस तरह मर्द, कि जहां चाहे और जितना चाहे खर्च करे (बस जिस तरह मर्दों के लिए कुछ पाबंदियाँ हैं, मसलन फुजूलखर्ची न करें और हराम जगह खर्च न करें, इसी तरह औरत के लिए भी हैं) सब से नाजुक मसला उसके यौन संबंध का है, इस में कम से कम फिकहे हनफी में – बालिग औरत को अधिकार हासिल है कि जिस से निकाह करना चाहे कर सकती है, ये अलग बात है कि कुछ दशाओं में अभिभावकों को आपत्ति का अधिकार दिया गया है, और अभिभावकों की अनुमति और संरक्षण में होने वाली शादी को पसंद किया गया है, लिहाजा औरत खुद से बिना अभिभावकों के निकाह कर लेती है तो निकाह हो जाता है।

(बदाये अल–सनाये, जिल्द 2, पृष्ठः241)

अगरचे पसंदीदा नहीं है, और इसके लिए हदीसों से दलील ली गई है, मसलन एक हदीस में है– "जो औरत विवाह के बंधन में न बंधी हो वो अपने निकाह के बारे में अपने अभिभावक से ज़्यादा हकदार है, कि जिस से चाहे निकाह करे। (अबू दाऊद, जिल्द 1, पृष्ठः 286), इसका समर्थन उस वाकिये से भी होता है कि एक कुंवारी लड़की का निकाह उसके बाप ने लड़की की मर्जी के बिना कर दिया था, उस लड़की ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शिकायत की, इस पर उससे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि "चाहे तो निकाह बाकी रखे और चाहे तो निकाह खत्म कर दे"।

और इसके अलावा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ये भी साफ साफ फरमा दिया कि "पहले से शौहर देख चुकी औरत की शादी उसके साफ साफ हुक्म के बिना न की जाए, और कुंवारी लड़की का भी निकाह उसकी इजाजत के बिना न किया जाए, इसके अलावा अभिभावकों को भी कुरआन मजीद में साफ तौर पर इससे मना किया गया है कि वो औरतों की पसंद के शख्स से उन्हें अपना निकाह करने में रुकावट डालें।

(सूरह बकरह– आयतः 232)

❖❖❖

पृष्ठ....25...का शेष

उत्तरः जकात ढाई फीसद निकाली जाती है।

प्रश्नः जकात किसको दी जाये?

उत्तरः हर वह गरीब मुसलमान जो साहिबे निसाब न हो वह जकात का हकदार है अलबत्ता अपने माँ बाप दादा दादी नाना नानी और औलाद पोते, पोती, नवासी नवासों को जकात नहीं दे सकते इसी तरह सैय्यद को भी जकात नहीं दे सकते। गरीब भाई बहन चचा फूफी आदि को जकात दे सकते हैं। गैर मुस्लिम को जकात नहीं दे सकते हैं।

प्रश्नः जेवरात और कारोबारी सामान पर जकात कैसे निकाले?

उत्तरः जेवरात और कारोबारी सामान की कीमत लगा लें और कुल कीमत से ढाई फीसद निकाल कर हकदारों को पहुँचायें बेहतर यही है कि हर रमजान में जकात अदा करें।

❖❖❖

–एक सत्य घटना से प्रेरित

पूरा पूरा इनसाफ़

शकील अहमद

शाम के 7 बजे हैं, पाँचवे घर से चौका–बरतन करके शशि अपने घर की ओर थकी लेकिन तेज़ कदमों से चली जा रही हैं। उम्र 37 साल, पुरानी और मैली साड़ी, चमड़े की पेवन्द लगी हवाई चप्पल, उलझे बाल, उड़ा हुआ चेहरा, कलाइयाँ बग़ैर चूड़ियों के, मांग सिन्दूर से खाली, आँखें वीरान, हाथ में पुराने अख़बार में लिपटी हुई कुछ बासी रोटियाँ। जैसे–जैसे करके वह एक गंदी और बदबूदार झोपड़ पट्टी में पहुँची, जहाँ उसका एक छोटा सा झोपड़ा था। गली में नाली के किनारे उसे अपने दो बच्चे 8 वर्षीय विनोद और 6 वर्षीय मिताली खेलते हुए मिल गये। ''भैया कहाँ है?'' शशि ने बच्चों से पूछा, तभी सामने से 10 वर्षीय अशोक आता हुआ दिखाई दिया। चेहरे, हाथ–पैरों और कपड़ों पर कालिख़ लगी हुई है, देखने में अजीब सा नज़र आ रहा है। वह एक मोटर मिस्त्री के यहां काम करता है। ''बड़ी देर कर दी बेटा चलो तुम तीनों हाथ मुँह धो लो मैं खाना दे रहीं हूँ।'' प्लेट में दाल चावल निकाल कर बच्चों के साथ खुद भी खाने के लिए बैठ गयी।'' मम्मी अख़बार में क्या है?'' मिताली ने पूछा। रोटियाँ हैं जो मालकिन ने दी हैं।'' तो लाओ ना, हम लोग सिर्फ दाल चावल खा रहे हैं।'' विनोद बोला। शशि ने प्यार से बच्चों के सिर पर हाथ फेरा और समझाया कि ''बेटा रोटी इस वक़्त रहने दो सुबह नाश्ते में चाय के साथ खा लेना।'' बच्चे मान गये और चुपचाप खाना खाने लगे। खाना खा कर शशि की नज़र अख़बार में छपी एक फोटो और उसके साथ लिखी एक खबर पर पड़ी। खबर ये थी कि एक आदमी की दिन दहाड़े बीच बाज़ार में गोली मार कर हत्या कर दी गयी थी और फोटो में मृतक का रोता बिलखता परिवार दिखाया गया था। इस ख़बर को देखकर उसका शरीर कांपने लगा, सर बहुत ज़ोर से चकराया वो दीवार के सहारे ज़मीन पर बैठ गयी। उसे अपने जीवन में घटी कई वर्ष पुरानी वह घटना याद आने लगी जिसने उसे मालकिन से कई घरों में चूल्हा–चौका करने वाली नौकरानी बना दिया था।

उसे याद आ रहा था कि इसी तरह एक दिन उसके पति नरेन्द्र को बीच बाज़ार में गोली मार कर रूपयों से भरा बैग छीन लिया गया था जो वो बैंक से ले कर आ रहा था। बाज़ार में भगदड़ मच गयी, लोग दुकानें बन्द करके भाग गये। भागने वालों से नरेन्द्र कह रहा था कि ''कोई मुझे अस्पताल पहुँचा दो'' और लोग डर से उसके करीब नहीं आ रहे थे कि हमारा नाम गवाहों में न आ जाए, जिससे बैठे बिठाए एक मुफ़्त की परेशानी हमें घेर लेगी। नरेन्द्र पुकारते–पुकारते बेहोश हो गया, तब तक पुलिस आ पहुंची। उसने उसे अस्पताल ले जाने की व्यवस्था की लेकिन रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गयी।

शशि पर जैसे आसमान टूट पड़ा, उसकी दुनिया वीरान हो गयी। तीन छोटे–छोटे बच्चों के साथ वो संसार के थपेड़े खाने के लिए अकेली खड़ी थी और फिर अकेली बेसहारा देख कर दुनिया ने उसे अपनी ठोकरों में रख लिया।

नरेन्द्र की मृत्यु के बाद जिस समय शशि की चूड़ियां तोड़ी जा रही थीं छोटे से अशोक ने उस महिला का हाथ

पकड़ लिया जो उन्हें तोड़ रही थी। ''कल ही तो पापा मम्मी को ये चूड़ियाँ पहना कर लाए थे, आप इनको क्यों तोड़ रही हैं। मम्मी आप इनको मना क्यों नहीं करती।'' मासूम बच्चे के सवाल पर उसका दिल बैठने लगा, धैर्य का वो बांध जिसने बड़ी मुश्किल से उसकी आँखों के धारों को रोके रखा था, टूट गया। उसने बेटे को कसकर चिमटा लिया और आँखों के धारों को बहने के लिए छोड़ दिया।

धीरे–धीरे दुनिया ने अपना रंग दिखाना शुरु किया। नरेन्द्र को आफ़िस की तरफ़ से मिला हुआ मकान शशि को कुछ दिन में छोड़ना पड़ा। पैतृक मकान में जिस पर रिश्तेदार कब्ज़ा किए हुए थे, उन्हें सामान रखने तक की जगह नहीं दी। मजबूरन एक किराए का मकान लेना पड़ा। बच्चों के स्कूल की फ़ीस, मकान का किराया, घर का खर्चा, धीरे–धीरे शशि खाली हाथ होती चली गयी। रिश्तेदारों ने पहले से ही आँखें फेर ली थीं। खर्च चलाने के लिए उसे नौकरी करनी पड़ी। कभी आफ़िस क्लर्क बनी, कभी दुकान में सेल्स गर्ल तो कभी बच्चों को ट्यूशन पढ़ाया। अबला जान कर लोगों ने जब जब उसकी इज़्ज़त पर हमला करना चाहा तब तब उसने नौकरी छोड़ दी और दूसरी नौकरी कर ली। अब शशि थक चुकी थी, एक–एक कर उसने दस जगह नौकरी बदली। नौकरी छोड़ कर घर बैठ रही। घर का क़ीमती सामान भी एक–एक कर बिकता चला गया। कुछ दिन उधार लेकर काम चलाया, लेकिन कब तक? तीन दिन से बच्चे उबले आलू में नमक डाल कर खा रहे थे, आज तो आलू भी नहीं थे। आज फ़ाक़े ने उनके दरवाज़े पर दस्तक दी थी। आज घर में खाने को कुछ नहीं था। इस रात शशि ने बड़ी मुश्किल से अपने भूखे बच्चों को बहलाकर सुलाया। घर के आंगन में लगे पेड़ की सूखी टेहनियों को चूलहे में जलाकर उस पर पानी से भरी एक पतीली रखदी जिसमें उसी पेड़ की कुछ पत्तियाँ भी पड़ी थीं। बच्चों को ये कहकर बहलाया कि खाना बन रहा है तुम लोग सो जाओ, जब खाना तैयार हो जायेगा तब जगा कर खिला देंगे। इस तरह इन भूखे बच्चों की फ़ाके में पहली रात गुज़री।

इन सब हालात ने उसे एक इन्क़िलाबी फ़ैसला करने पर मजबूर किया, उसने सोचा कि अब नौकरी ऐसी जगह करेंगे जहां पुरुषों का सामना न हो या कम हो, औरतों के बीच काम करने पर कम से कम इज़्ज़त तो महफ़ूज़ रहेगी। बहुत सोचने पर उसे ऐसी नौकरी रसोई घर (बावर्ची खाना) में नज़र आई। फिर एक एक कर उसने पाँच घरों में चूल्हा–चौका करने की नौकरी कर ली। इन घरों को छाँट कर उसने नौकरी के लिए चुना था क्योंकि हर घर में कई–कई औरतें थीं जिनके बीच में उसकी इज़्ज़त ज़्यादा महफ़ूज़ थी। सुब्ह से शाम तक कपड़े धोना, झाड़ू–पोछा करना, खाना पकाना बरतन मांजना उसकी दिनचर्या हो गई। हर घर में उसके जाने और वापस आने का समय बंधा हुआ था। इस तरह वह एक मालकिन से घरों में काम करने वाली नौकरानी बन गई।

अशोक पढ़ाई छोड़ कर काम सीखने लगा, शशि ने मकान छोड़ कर इस झोपड़े में रहना शुरु कर दिया, छोटे दोनों बच्चों को एक ख़ैराती स्कूल भेजने लगी। इस तरह वो अपनी उम्र के दिन पूरे करने लगी।

मम्मी मुझे नींद आ रही है।'' मिताली उसका कंधा पकड़ कर हिला रही थी। शशि आँसू पोछती हुई बच्चों का बिस्तर बिछाने लगी।

एक शाम जब शशि काम से वापस लौटी तो उसे अपने दरवाज़े पर एक अजनबी महिला नज़र आई। उसने अपना नाम उम्मे हानी बताया और एक दैनिक अख़बार की पत्रकार के रूप में अपना परिचय कराया और उससे बात करने का कुछ समय मांगा। शशि उसे अन्दर ले गई और उसे एक ख़स्ताहाल कुर्सी पर बैठा कर बच्चों को खाना खिलाने लगी। जब बच्चे खाना खा चुके तो वो उम्मे हानी के पास आ कर बैठ गई और पूछा कि कैसे आने का कष्ट किया। उम्मे हानी बोली, मैं उच्चतम न्यायाल के उस फैसले में आपकी प्रतिक्रिया जानने के लिए आई हूँ, जिसमें आपके पति के हत्यारे की फाँसी की सज़ा बहाल रखी गयी है और उसे कुछ दिन में फाँसी दे दी जाएगी। ''शशि ने एक ठंडी सांस ली और एक फीकी मुस्कान उसके होंठों पर आ गई। उम्मे हानी एक मंझी हुई पत्रकार थी फ़ौरन उसने पूछा ''लगता है आप इस फ़ैसले से संतुष्ट नहीं हैं।'' इस प्रश्न पर सोई हुई वो शशि जाग उठी जो कालेज के दिनों में होने वाले हर डिबेट में सब पर छाई रहती थी। ''हाँ मैं इस फ़ैसले से संतुष्ट नहीं हूं, हत्यारे को बड़े सस्ते में निपटाया जा रहा है। अभी तो मेरा उससे बहुत सा हिसाब बाक़ी है।'' शशि ने बड़े जोशीले अंदाज़ में कहा ''क्या मतलब? कैसा हिसाब? हत्यारे को दुनिया की सबसे बड़ी सज़ा दी जा रही है फिर भी आप कहती हैं कि उसे सस्ते में निपटाया जा रहा है।'' उम्मे हानी ने ताज्जुब से पूछा। शशि बोली, ''जान के बदले में जान ली जा रही है लेकिन अभी हत्यारे से एक हंसता–खेलता परिवार उजाड़ देने का बदला कहां लिया जा रहा है। न जाने कितनी पीढ़ियों तक कितनी सदियों तक इस हत्या का असर पहुँचे और ये परिवार दुनिया की ठोकर खाए। दुनिया द्वारा इस उजड़े परिवार पर लगाई गई हर ठोकर का हिसाब और बदला चाहिए मुझे, क्योंकि इन लगने वाली ठोकरों का असल कारण वो हत्यारा है।

मेरे सास–ससुर नरेन्द्र की हत्या के छह महीने के भीतर स्वर्ग सिधार गये। उन्हें नरेन्द्र का ग़म ले गया। रातों में टहलना, हर वक़्त रोते रहना, अजीब से दर्द और ग़म में रात दिन गुज़रना मैंने खुद देखा है। इसका कारण भी यही हत्यारा है अभी उनके एक–एक क़तरे आँसू का हिसाब बाक़ी है।

मेरे बच्चे अनाथ हो गये, ये अच्छे से अच्छा अपनी पसन्द का पहनते थे, आज मालकिनों द्वारा तरस खाकर दिये हुए कपड़े पहन रहे हैं। पेवन्द लगे और गले हुए कपड़ों की हालत आप देख रही हैं। शहर के एक अच्छे स्कूल में ये पढ़ते थे अब ख़ैराती स्कूल जाते हैं। बड़े बेटे की पढ़ाई छूट गयी, कुछ हुनर सीखने के लिए काम पर लगना पड़ा। उसका बचपन छिन गया, वक़्त से पहले जवानों की ज़िम्मेदरी उठा ली। अपनी पसंद का खाते थे, आज सिर्फ़ पेट भरते हैं, कभी तो वो भी नहीं होता, कई–कई वक़्त भूखे रहना पड़ता है जब इनके पापा घर आते थे तो ये तीनों उनकी गोद में चढ़ कर बारी–बारी से उन्हें प्यार करते थे, वो इन्हें प्यार करते थे। एक दूसरे को गुदगुदाते थे और खूब हंसते थे। आज वर्षों हो गये बच्चे दिल खोल कर हंसे नहीं हैं जब मैं इन्हें हंसाने की कोशिश करती

हूं और ये थोड़ा सा हंस लेते हैं तो फ़ौरन इस तरह संजीदा हो जाते हैं जैसे बहुत बड़ा जुर्म किया हो। ये अक्सर तकिया में मुँह छिपाकर आँसू बहाते हैं। मेरी गोद में लेटकर अक़्सर इनकी आँखें नम हो जाती हैं। बच्चों को पापा का प्यार चाहिए, मैं कहाँ से लाऊँ पापा का प्यार।

बच्चों के आँसू, छिना हुआ बचपन और मुस्कान, वो तमन्ना जिसका गला घोंट दिया गया, हर महरूमी का असल कारण वह हत्यारा है। अभी उससे इसका हिसाब बाक़ी है। मैं विधवा हो गयी, मेरा संसार उजड़ गया, मेरा भविष्य अंधकारमय हो गया। पति का संग और सास–ससुर का सहारा मेरे ऊपर से उठ गया। पहले मेरे पति परिवार का बोझ उठाए हुए थे अब मुझे उठाना पड़ रहा है। मैं घरेलू नौकरानी बन गई, अब मुझे घर और बाहर दोनों ज़िम्मेदारी उठानी पड़ रही है। बच्चों की पापा–मम्मी दोनों बनी हूँ। इस दोहरी ज़िम्मेदारी ने मेरी कमर तोड़ दी है। इसका ज़िम्मेदार कौन है? मैं दर दर भटकी, जगह–जगह नौकरियां की, बेइज़्ज़ती सही। मुझ पर पड़ने वाली रात–दिन की परेशानियों का असल कारण क्या वह हत्यारा नहीं है? मुझे अपनी बेबसी और तन्हाई का हिसाब चाहिए।

परिवार पर अब तक पड़ने वाली आप बीती मैंने आपको बताई है। अभी तो मुझ पर और मेरे परिवार पर पूरे जीवन में आने वाली वो कठिनाईयाँ जो मुंह खोले हम सबका इन्तिज़ार कर रही हैं। उनका हिसाब बाक़ी है। मेरे बच्चों की अशिक्षा, गरीबी और व्यक्तित्व का सही विकास न होने का जो असर इनकी संतानों पर पड़ेगा और पीढ़ी दर पीढ़ी न जाने कहाँ तक जाएगा। क्या इन सबका असल ज़िम्मेदार यह हत्यारा नहीं है? क्या इन्साफ़ का तक़ाज़ा ये नहीं है कि इस परिवार को पूरा–पूरा इन्साफ़ मिले।''

उम्मे हानी बहुत गौर से शशि के तर्क सुन रही थी। उसके चुप होने पर उम्मे हानी बोली, ''शशि मैं तुम्हारा दुख समझती हूँ, तुम पूरे–पूरे हिसाब और बदले की अधिकारी हो, लेकिन एक न्यायाधीश इससे बड़ी सज़ा नहीं दे सकता, अगर तुम्हें खुद न्यायाधीश बना दिया जाए तो क्या तुम हत्यारे से पूरे हिसाब के अनुसार बदला ले सकोगी?'' इस सवाल पर शशि कुछ देर तक सोचती रही और फिर ''नहीं'' में गर्दन हिला दी। उम्मे हानी ने फिर सवाल किया, ''कल्पना करो कि हत्यारा तुम्हारे हवाले कर दिया जाए और तुम्हें एक ऐसी जादू की छड़ी मिल जाए जिससे उसे जो चाहो बना दो और जितनी बार चाहो मार कर ज़िन्दा कर दो, उस समय तुम क्या करोगी? दाँत भींचकर शशि ने कहा, ''मैं उसे नाली में रेंगने वाला कीड़ा बना दूँगी या गंदगी को खाने वाला और उसमें रहने वाला सुअर बना दूँगी। मैं उसे बेदर्दी से मार कर ज़िन्दा करूंगी फिर मारूंगी। जब तक मेरे हाथ में छड़ी रहेगी मैं उसे मारती और जिलाती रहूँगी।'' जोश में शशि ने मुट्ठियां भींच ली और खड़ी हो गयी। उसकी ये हालत देख कर उम्मे हानी हौले से मुस्कुराई और बोली, ''शशि इस तरह तुम अपने दिल की भड़ास निकाल सकती हो न्याय नहीं कर सकतीं, हिसाब और बदला नहीं ले सकतीं।'' शशि बैठ गयी और धीमी आवाज़ में बोली, ''हाँ इससे दिल में कुछ ठंडक तो आ सकती है न्याय नहीं हो सकता। (इसी तरह पुनर्जन्म या आवागमन के नतीजे में बार–बार दुनिया में पैदा होने और

मरने से न पूरी पूरी सज़ा मिल सकती है न ईनाम मिल सकता है)। अच्छा एक बात बताओ ''किसी ऐसे हत्यारे को जिसने एक से अधिक हत्याएं की हों एक से अधिक परिवार उजाड़े हों उसे दुनिया की अदालत बड़ी से बड़ी क्या सज़ा दे सकती है।'' ''मृत्युदण्ड'' शशि बोली। इस पर उम्मे हानी ने गम्भीरता से कहा, ''एक आदमी की हत्या करने वाले को जो बड़ी से बड़ी सज़ा दी जा सकती है वही सज़ा कई हत्याएं करने वाले को दी जाती है। इसे तो उससे कई गुना बड़ी सज़ा दी जानी चाहिए।'' शशि के पास इसका कोई जवाब नहीं था। अब उम्मे हानी ने कहा, ''असल में दुनिया के अन्दर किसी भी इन्सान को उसके कर्मों का फल पूरा–पूरा नहीं मिल सकता। न ईनाम के रूप में न सज़ा के रूप में। इसीलिए ईश्वर ने परलोक बनाया है। जहाँ इस जीवन के बाद हमें दोबारा उठा कर अपने सामने खड़ा करेगा और कर्मों का हिसाब लेगा। वहाँ अधूरा न्याय नहीं होगा, उस दिन किसी के साथ अन्याय नहीं होगा, वहां न्याय होगा क्योंकि ईश्वर खुदा स्वयं न्यायाधीश के आसन पर विराजमान होगा। इस समय मुझे संसार के रचने वाले के अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की एक बात याद आ रही है जिसका भावार्थ ये है ''हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत उल्लिखित है कि एक व्यक्ति हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की सेवा में उपस्थित हुआ और सामने बैठ गया। उसने कहा ''हे ईश्वर के दूत, मेरे पास कुछ दास हैं। उनका स्वभाव ये है कि कभी–कभी वह मुझसे झूठ बोलते हैं, मेरी चीज़ों में ख़यानत (हेरा–फेरी) भी करते हैं, मेरी अवज्ञा (नाफरमानी) भी करते हैं उनकी इन हरकतों पर कभी उन्हें गालियां देता हूँ और कभी मारता भी हूँ। अपने इस व्यवहार की वजह से प्रलय (क़यामत) के दिन मेरी क्या दशा होगी (अर्थात परमेश्वर मेरा और उनका फ़ैसला किस तरह करेगा) महा ईशदूत हज़रत मुहममद सल्ल0 ने फरमाया कि तुम्हारे उन दासों ने जो तुम्हारी ख़यानत और नाफरमानी की होगी तुमसे जो, जो झूठ बोले होंगे (इसके नतीजे में) तुमने उनको जो सज़ाएं दी होंगी, प्रलय के दिन इन सबका पूरा–पूरा हिसाब किया जाएगा। बस तुम्हारी सज़ा अगर उनके दोषों के बराबर होगी, तो ये मामला बराबरी पर निपट जाएगा न तुमको कुछ मिलेगा न तुमको कुछ देना पड़ेगा अगर तुम्हारी सज़ा उनके दोषों से कम साबित हुई तो तुम्हें वहां पूरा हक़ मिलेगा और अगर तुम्हारी सज़ा उनके दोषों से अधिक साबित हुई तो तुमसे इसका बदला उनको दिलवाया जाएगा। (जब उस व्यक्ति ने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का ये उत्तर सुना) तो आपके पास से एक ओर हट कर रोने और चिल्लाने लगा। (उसे परलोक के न्याय के भय ने रुला दिया था)। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फिर उससे फरमाया, क्या तुम कुरआन में अल्लाह का ये कथन नहीं पढ़ते– ''और हम क़ायम करेंगे प्रलय के दिन इन्साफ की तराजू, बस नहीं जुल्म हो। किसी नफ़्स (जान) पर कुछ भी, और अगर होगा किसी का अमल या हक राई के एक दाने के बराबर, हाज़िर करेंगे हम उसको भी। और काफ़ी हैं हम हिसाब करने वाले।''

उस व्यक्ति ने पूछा, ''हे परमेश्वर के महादूत (यह सब कुछ सुनने के बाद) मैं अपने लिए और उनके लिए इससे

बेहतर कुछ नहीं समझता कि उनको (दासों को) अपने से अलग कर दूं। मैं आपको साक्षी बनाता हूं कि मैंने उनको आज़ाद किया और अब वे आज़ाद हैं।''

एक ज्ञानी ने इसकी व्याख्या की– ''ईमान (आस्था) की यही शान है और सच्चे ईमान वाले का यही व्यवहार होना चाहिए कि जिस चीज़ में परलोक का भय नज़र आए उससे बचा जाए चाहे सांसारिक नज़रिये (दृष्टिकोण) से उसका अपना कितना ही नुक़सान हो।

(तिर्मिज़ी)

मुहम्मद सल्ल0 के पवित्र कथन और कुरआन के मंत्र का भावार्थ।

ये सुनकर एक आत्म संतोष शशि के चेहरे पर उभर आया। उसने सोचा मेरा भी कोई है, मुझ अबला को भी इंसाफ़ मिल सकता है। इंसाफ़ जो पूरा–पूरा हो। इस उम्मीद की किरण ने उसके दिल के उस बोझ को कम कर दिया जो शायद पूरे जीवन उसके साथ रहता। डबडबाई आँखों से शशि ने उम्मे हानी को देखा तो उसे भरी आँखों और मुस्कुराते चेहरे के साथ अपनी ओर देखते पाया। नज़र मिलते ही दोनों की आँखों के झरने बह पड़े।

जिस तरह इस दुनिया में पूरी–पूरी सजा नहीं मिल सकती उसी तरह पूरा–पूरा ईनाम भी नहीं मिल सकता।

इस्लाम यतीम (अनाथ) को मुहब्बत से देखने, उसके सर पर मुहब्बत से हाथ फेरने, उसकी ज़रूरतों का ख़्याल रखने (परवरिश) करने वाले से बड़े पुण्य का वादा करता है।

अगर कोई यतीम की परवरिश करे और उसकी ज़रूरतों का ख़्याल रखे, उसकी शिक्षा पर ध्यान दे तो इसके नतीजे में जो इस यतीम के व्यक्तित्व में निखार आयेगा। उसका फायदा न सिर्फ ये यतीम उठायेगा बल्कि उसकी औलादों और नस्लों को भी फायदा होगा जो पीढियों सदियों तक अपना असर दिखायेगा।

अब अगर यतीम के साथ नेकी करने वाले को दुनिया में ईनाम के तौर पर जन्नत ही क्यों न दे दी जाये, उसकी नेकी का पूरा बदला नहीं मिल सकता क्योंकि हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है। वह कुछ साल ही दुनिया में ईनाम में मिली हुई इस जन्नत का फायदा उठा सकता है। जबकि उसके द्वारा की गई नेकी का असर पीढियों और सदियों में जा रहा है। इसीलिए दुनिया में पूरा–पूरा ईनाम भी नहीं मिल सकता।

क़यामत (प्रलय) के दिन नेकी या बुराई का बदला गिन कर नहीं दिया जायेगा बल्कि तौल कर दिया जायेगा। इसीलिए क़यामत के दिन तराजू लगाई जायेगी और हर नेकी या बुराई का वज़न किया जायेगा। उस दिन किसी के साथ नाइन्साफी नहीं होगी। उस दिन पूरा पूरा इन्साफ होगा क्योंकि हर नेकी या बुराई का असल वज़न अल्लाह ही जानता है।

❖❖❖

दुआ-ए-मग़फिरत की दरख़्वास्त

सच्चा राही के सम्मानित स्तम्भकार डॉ0 हैदर अली खाँ साहब (बलिया उ0प्र0) के दामाद जनाब शकील अहमद साहब का सिर्फ़ 40 वर्ष की आयु में अचानक निधन हो गया। ''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'' आप सबसे दुआ–ए–मग्फ़िरत की दरख्वास्त है। उन्होंने अपने पीछे बेवा के अलावा एक बेटा और दो बेटियाँ छोड़ीं। अल्लाह तआला परिजनों को सब्र–ए–जमील अता फ़रमाए और इनके भविष्य को उज्जवल बनाए। आमीन

(इदारा)

राम प्रसाद के ठेंगे

शमीम इक़बाल खाँ

लाइन साहब एक अच्छी तबियत के इन्सान थे। उन्होने अपने व्यवहार और स्वभाव से कर्मचारियों का दिल जीत रखा था। अधिकारी वर्ग भी उनसे प्रभावित था और उनकी इज्जत करते थे। कर्मचारियों की सेवा सम्बन्धी और व्यक्तिगत समस्याओं को अपनी निजी समस्या मानते हुये उनके समाधान का भरपूर प्रयत्न करते थे। किसी कर्मचारी अथवा उसके आश्रित की शादी में खर्च भी करते थे। अन्य ज़रुरतमन्दों की भी आवश्यकतानुसार मदद करते रहते थे। सरकारी सामान के क्रय अथवा निर्माण कार्य में भुगतान के समय ठेकेदार आदि उन्हें एक बन्द लिफ़ाफा दिया करता था जिसे वे ले लिया करते थे। ज़ाहिर है इस लिफ़ाफ़े में चिट्ठी नहीं होती होगी। लाइन साहब इस प्रकार के धन को अपनी आवश्यकताओं के लिये खर्च करना गुनाह समझते थे। उनका मानना था कि यदि वे इस धन को स्वीकार नहीं करते हैं तो कोई न कोई इसे लेगा ही और इसका दुरुपयोग करेगा और बुरी आदतें पाल लेगा क्योंकि अनुचित प्रकार से प्राप्त किया गया रुपया अनुचित प्रकार से ही खर्च भी होता है। लाइन साहब इस प्रकार के पैसे अपने वेतन के पैसे से बहुत दूर रखा करते थे और यही पैसा दूसरों पर खर्च कर दिया करते थे।

राम प्रसाद सिपाही आज सेवानिवृत्त हो रहा था और उसको विदायी देने के लिये लाइन साहब ने पूरा प्रबन्ध कर रखा था। सायं को चाय-नाश्ते पर पुलिस लाइन में उपस्थित सभी कर्मचारी तथा पुलिस अधीक्षक के साथ-साथ अन्य अधिकारी भी आमन्त्रित थे। परन्तु बड़े कप्तान साहब लखनऊ गये थे और देर रात को लौटे थे इसलिये वे सम्मिलित नही हो पाये थे। हालांकि काफ़ी देर तक उनकी प्रतीक्षा की गई थी क्योंकि उन्हों ने लाइन साहब को आश्वासन दिया था कि वे समय पर आ जायेंगे। सी.ओ. साहब भी देहात के किसी थाने पर सुबह ही चले गये थे। वे लौट तो आये थे परन्तु समारोह में सम्मिलित इस लिये नहीं हो पाये थे कि थक बहुत गये थे। उन्हें पता चल गया था कि कप्तान साहब अभी नहीं लौटे हैं इसी लिये सम्भवतः उन्हें ज्यादा थकावट लग रही थी। अन्य सभी क्षेत्राधिकारी उपस्थित हुये थे।

सी0ओ0 सिटी की अध्यक्षता में समारोह आरम्भ किया गया। पहले सभी ने नाश्ता किया उसके बाद चाय का दौर चला। जब सभी लोग चाय-पानी कर चुके तो लाइन साहब माइक पर खड़े होकर संक्षेप में राम प्रसाद का परिचय देते हुये कहा कि इस जनपद में अपनी नियुक्ति के समय से राम प्रसाद को जानता हूँ। शुरु में मैं इन्हें आम सिपाही के स्तर का समझता रहा परन्तु धीरे-धीरे इनकी विशेषतायें मुझ पर ज़ाहिर होने लगीं। जल्द ही मुझे यह बात समझ में आ गई कि राम प्रसाद एक आम सिपाही से हट कर हैं। इन्होंने न तो कभी छुट्टी बढ़ाई, न ग़ैर हाजिर हुये। इनको मैंने सदा समय का पाबन्द पाया। कभी इनका जवाब ही नहीं तलब हुआ तो सज़ा की बात ही नहीं सोची जा सकती। ड्यूटी पर सदा सतर्क और चाक-चौबन्द पाये गये। बड़े मृदु-भाषी और अनुशासित सिपाही रहे हैं। गम्भीर परिस्थितियों में भी सभ्यता के दायरे में रहकर बड़ी मनोरंजक बातें करना राम प्रसाद जी की विशेषता रही है। मैं इनकी ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा को सलाम करता हूँ और यह कामना करता हूँ कि ईश्वर इनके जैसा, सभी को न सही तो कम से कम कुछ लोगों को तो बना ही दे।

लाइन साहब के बाद सी0ओ0 सिटी साहब ने आशीर्वाद बचन के रुप में कहा कि राम प्रसाद या उनके परिवार को जब कभी भी हमारी आवश्यकता हो तो वे बिना झिझक अपनी समस्या ला सकते हैं मैं उन्हे आश्वस्त करता हूँ कि उनकी पूरी मदद की जायेगी। उन्होंने पुलिस लाइन के कर्मियों की ओर से एक घड़ी तथा गीता और रामायण की एक-एक किताब उपहार स्वरुप भेंट की। उसी सभा में राम प्रसाद को ग्रेच्युटी एंव अन्य

देय सम्बन्धी चेक का लिफ़ाफ़ा भी सी.ओ. साहब के माध्यम से भेंट किया गया।कोष शाखा के इस कार्य की सराहना सभी उपस्थित कर्मियों ने मन-ही-मन में की। शायद उन्हें नहीं मालूम था कि इस प्रकार के कड़े आदेश कप्तान साहब के थे कि पेन्शनर के देय अदायगी की सारी कार्यवाही पहले ही कर ली जाये ताकि उसका मनोबल बना रहे और बाद में उसे धक्के न खाने पड़े। कई बार ऐसा भी होता है कि लोग विभाग छोड़ने के साथ-साथ संसार भी छोड़ देते हैं लेकिन उन्हें पेन्शन नहीं मिल पाती ।

राम प्रसाद रात में अपने बैरेक में पलंग पर सीधा लेटा हुआ था। बाहर बरामदे में लगे 40 वाट के बल्ब की हल्की रोशनी खिड़की से अन्दर आ रही थी। वह छत में लगे पंखें को घूर रहा था जो धीमी गति से कट-कट की आवाज़ करता हुआ चल रहा था। पंखे की हवा से मानों किताब के पिछले पृष्ट पलट गये हों वह सोच रहा था कि तीस साल पहले उसकी नौकरी का पहला दिन था और आज उसकी नौकरी की आखरी रात है। सुबह से मैं फिर आज़ाद हो जाऊँगा। अपना गांव होगा, अपना घर होगा, अपने बच्चे होंगे, पोते-पोतियॉ होंगी, अपने खेत होंगे, लहलहाती फ़सलें होंगी, अपनी हुकूमत होगी। इन्हीं ख्यालों में खोया और एक अन्जानी ख़ुशी दिल में लिये वह सो गया।

दूसरे दिन सुबह राम प्रसाद और दिनों की अपेक्षा कुछ जल्दी ही उठ गया। नहा-धो कर तैयार हो गया और अपना सामान बान्ध कर तख़्त पर, जिस पर वह लेटता था, रख दिया गांव तक जाने वाली बस दस बजे छूटती थी। उसने सोचा इस अवधि में सो.ओ. लाइन और कप्तान साहब से उनके बंगले जा कर सलाम कर आऊँ और लौटते समय सामान ले जाने के लिये रिक्शा भी लेता आऊँगा। इसी उद्देश्य से वह सायकिल पर बैठ कर चल दिया।

पुलिस लाइन से निकलते ही सी.ओ. लाइन का निवास था। राम प्रसाद गेट के पास ही बाहर सायकिल खड़ी करके ताला लगाया और धीरे एंव अनुशासित तरीके से उसने गेट खोला। गेट खुलने की आहट से अन्दर से कुत्ते के भौंकने की आवाज़ आई और साथ ही सी.ओ. साहब का नौकर बाहर आया और आते ही उसने रुखे स्वर में पूछा-

क्या काम है?

राम प्रसाद ने कहा साहब से मिलना है।

क्या नाम है?

राम प्रसाद।

कहॉ से आये हो?

पुलिस लाइन से।

नौकर अन्दर चला गया फिर काफ़ी देर बाद बाहर आया और कहा साहब ने कहा है कि ग्यारह बजे वह कार्यालय में मिले राम प्रसाद को एक धक्का सा लगा और वह दुःखी मन से सायकिल पर बैठ कर कप्तान साहब के बंगले की ओर चल दिया उसका मस्तिष्क उस शेर को याद करने की कोशिश में लगा हुआ था जो उसने कुछ दिन पहले पुलिस पत्रिका में पढ़ा था थोड़ी सी कोशिश के बाद उसे शेर याद आ ही गया-

हमारे क़द को नुमाया न होने देंगे कभी
कुछ ऐसे हाथ हमारे सर में रखे हैं ।

(नुमाया - बढ़ने देना)

कुछ ही देर में वह कप्तान साहब के बंगले पर पहुँच गया, कप्तान साहब लान में टहल रहे थे, राम प्रसाद को देख कर वह ठहर गये और पूछा-

कहो राम प्रसाद कैसे हो?

राम प्रसाद ने सावधानी बना कर जय हिन्द कहा वह मन में सोचने लगा कि साहब को मेरा नाम याद है जब कि चार-पांच माह पहले पन्द्रह दिन टेलीफ़ून ड्यूटी की थी कप्तान साहब के मुख से अपना नाम सुन कर उसका मन गद-गद हो गया उसने हाथ जोड़ कर कहा साहब सब आप का आशिर्वाद है साहब अपने पीछे आने का संकेत करते हुये अपने कार्यालय में जा कर बैठ गये राम प्रसाद भी साहब के पीछे-पीछे दरवाज़े से प्रवेश कर एक किनारे खड़ा हो गया साहब ने कुर्सी पर बैठने का इशारा करते हुये घन्टी बजायी टेलीफ़ून ड्यूटी पर नियुक्त सिपाही अन्दर आया और सैल्यूट करके खड़ा हो गया साहब ने सिपाही से कहा दो चाय ले आओ सिपाही सैल्यूट करके चला गया।

राम प्रसाद अभी तक खड़ा था साहब ने उससे मुस्कराते हुये कहा बैठो, अब तुम सिपाही नही हो, सम्मानित नागरिक हो साहब ने आगे कहा- मुझे अफ़सोस है कल रात मैं काफ़ी देर से लौटा था इसलिये तुम्हारी विदायी पार्टी

में सम्मिलित नही हो सका. बड़ा अच्छा हुआ तुम आ गये वरना मुझे अफ़सोस रहता- ख़ैर अच्छा यह बताओ रिटायर होने के बाद अब तुम क्या करोगे अगर तुम कहो तो यहॉ किसी मिल में सुरक्षा कर्मी में लगवा दूँ।

राम प्रसाद ने हाथ जोड़ते हुये कहा श्रीमान जी आप का बहुत-बहुत धन्यवाद जो आपने मेरी भलाई की है और इस समय भी भलाई की बात ही सोच रहे हैं श्रीमान जी मैं अब नौकरी करना नही चाहता तीस वर्षों से अपने परिवार से, अपने खेतों, अपने गांव से बिछड़ा हुआ हूँ, अब वहीं जाकर रहूँगा और खेती बारी करूँगा. नौकरी करने की अब बिल्कुल इच्छा नही है।

साहब ने अगला प्रश्न किया कितने बच्चे हैं?

श्रीमान जी मेरे दो लड़के हैं, बड़ा लड़का गांव में ही रहता है और इन्टर कालेज में अध्यापक है दूसरा लड़का प्लाटून कमाण्डर है।

इसी बीच चाय आ गई अर्दली ने पहले चाय का प्याला राम प्रसाद के समक्ष रखा उसके बाद साहब के समक्ष सम्भवतः इस प्रकार का शिष्टाचार निभाने का निर्देश कप्तान साहब ने पहले ही दे रखे होगें साहब ने राम प्रसाद से चाय पीने को कहा और साथ ही उन्होने अपना कप होंठों से लगा कर चाय की चुस्की लेते हुये राम प्रसाद से बोले अच्छा यह बताओ तीस साल की सेवा में तुम्हारा क्या अनुभव रहा है?

श्रीमान जी यदि आप आज्ञा दें तो अपने अनुभव के सम्बन्ध में एक कहानी सुना दूँ।

साहब - ज्यादा लम्बी तो नही है? मुझे कहीं जाना है।

नही हुज़ूर केवल एक मिनट-

अच्छा सुनाओ- कप्तान साहब ने मुस्कराते हुये कहा।

साहब की अनुमति पा कर राम प्रसाद ने कहना शुरु किया-

हरिया नाम का एक आदमी किसी गांव में रहता था उसे बात-बात में 'ठेंगा' बोलने की आदत थी जैसे अगर कहना हो 'मैं ने उससे रुपया मांगा तो उसने नही दिया' इस वाक्य को वह यूँ कहता- 'मेरे रुपये मांगने पर उसने मुझे ठेंगा दिखा दिया' साथ ही साथ वह अपने दाहिने हाथ का अंगूठा आगे कर दिया करता था उसने किसी से सुना कि अमुक स्थान पर एक साधू महराज हैं जो दस वर्षों तक तो सोते रहते हैं और केवल करवट बदलने के लिये जागते हैं और फौरन ही सो जाते हैं और यदि इसी समय उनसे कुछ मांग लिया जाये तो वह फौरन मिल जाता है हरिया अपने भाग्य को जगाने के लिये सोते हुये साधू महराज के पास पहुंचा तो देखा साधू महराज करवट बदल रहे हैं और जब तक वह उनके पास पहुंचता, वे सो चुक थे हरिया ने सोचा अब आ ही गये हैं तो दस वर्षो तक प्रतीक्षा क्यों न कर ली जाये उसने वहॉ रहना शुरु कर दिया वक्त गुज़ारी के लिये उसने सफ़ाई की और फूल-पौधे लगाये, जंगल को चमन बना दिया बहरहाल वह दस वर्षो तक वहॉ किसी तरह रुका रहा अन्तिम समय तब वह ऊब चुका था और झल्ला भी गया था इसी बीच बाबा की नीन्द खुल गई और उन्होने कहाः

मांग बच्चा क्या मांगता है

हरिया झल्लाया हुआ तो था ही बोला, मांगे क्या 'ठेंगा'

बाबा ने तथास्तु कहा और करवट बदल कर सो गये उधर हरिया के पूरे शरीर पर ठेंगे (अंगूठे) उग आये हरिया बहुत परेशान हुआ उसने बाबा को जगाने की बहुत कोशिश की लेकिन बाबा कहॉ जागने वाले उसे दस साल और रुकना पड़ा इस बार जब बाबा जागे तो हरिया ने कहा बाबा हमारे अंगूठे तो ग़ायब कर दो बाबा ने कहा तथास्तु और करवट बदल कर सो गये हरिया के शरीर के अंगूठे गायब तो हो गये साथ ही साथ उसके अपने वास्तविक अंगूठे भी गायब हो गये अब हरिया को अगले दस वर्षो तक फिर रुकना पड़ा और बाबा के जागने पर उसने कहा महराज हमारे मूल अंगूठे तो वापस कर दो बाबा ने कहा तथास्तु और सो गये इस प्रकार हरिया तीस वर्षों में अपना ही ठेंगा लेकर घर लौटा।

कप्तान साहब मुस्कराते हुये खड़े हो गये और 'अच्छा अनुभव है' कहते हुये दूसरे दरवाज़े से बंगले के अन्दर चले गये राम प्रसाद भी बाहर निकल आया और सायकिल पर बैठ कर पुलिस लाइन की ओर चल दिया वह फिर सोच रहा था कि यदि लाइन साहब और कप्तान साहब की तरह कुछ और अधिकारी हो जायें तो पुलिस बल का मनोबल कितना ऊँचा हो सकता है

❖❖❖

स्वास्थ्य

व्यायाम करें, स्वस्थ रहें

इदारा

अच्छी और निरोग सेहत के लिए व्यायाम यानी वर्जिश बहुत ज़रूरी हे। खास कर शहरी ज़िन्दगी में लोगों की सेहत खराब होने के पीछे एक बड़ी वजह आराम तलब होना, अव्यवस्थित दिनचर्या और ग़लत खान–पान है। इससे हमारा शरीर कई तरह की बीमारियों से ग्रस्त हो जाता है। आज के समय शुगर, ब्लड प्रेशर, पथरी, कमर दर्द, मोटापा आदि की समस्या आम हो चुकी है। इस तरह की बीमारियों से बचाव के लिए संतुलित खानपान के अलावा व्यायाम बहुत ज़रूरी है। प्राकृतिक रूप से इन्सानों का शरीर मेहनत करने के लिए बना है, इसलिए अपनी क्षमता भर या हल्का फुल्का व्यायाम करने से शरीर स्वस्थ रहता है, पसीने के साथ अनेक विषाक्त पदार्थ शरीर से बाहर निकल जाते हैं भोजन के ज़रिये जो कैलोरी शरीर में जाती है वह शरीर को ऊर्जा देती है, लेकिन शारीरिक श्रम अथवा व्यायाम न करने से यही कैलोरी शरीर में चरबी और फैट के रूप में जमा होने लगती है। एक सीमा से अधिक चरबी शरीर में जमा होने के बाद इससे कई तरह की शारीरिक समस्साएं जन्म लेती हैं। इससे मोटापा डायबिटीज़ और ब्लेड प्रेशर जैसी समस्याएं हो सकती हैं जो बाद में किडनी और हार्ट के लिए घातक साबित होती हैं। कहा जाता है स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क़ होता है। जब शरीर बीमार हो तो मस्तिष्क भी ठीक ढंग से काम नहीं करता, इससे डिप्रेशन, चिंता, चिड़चिड़ापन, एंजाइटी इत्यादि मानसिक समस्या हो सकती है, इससे समझा जा सकता है कि शारीरिक श्रम अथवा व्यायाम एक मनुष्य के लिए कितना ज़रूरी है। इस्लाम में सेहत को ठीक रखने का बड़ा महत्व है और इसको सवाब बताया गया है, इस्लामी शिक्षाओं में संतुलित खान–पान से लेकर सुबह–सवेरे उठने और स्वस्थ रहने के लिए अनेक स्थानों पर कहा गया है, पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने कमज़ोर मोमिन के मुक़ाबिले में ताक़तवर मोमिन को ज़्यादा बेहतर बताया है चाहे वह शारीरिक रूप से ही स्वस्थ और ताक़तवर क्यों न हो, पैगम्बर सल्ल0 के अनेक साथी शारीरिक रूप से बहुत फिट और बहादुर थे, इसका कारण यह था कि वे खान–पान के साथ सेहत का भी पूरा ख्याल रखते थे, बढ़ते उपभोक्ता बाद और भोगवाद की आंधी में अन्य लोगों की तरह मुसलमान भी वह तरीक़ा भूल गये जो उनको स्वस्थ रहने के लिए बताया गया था, एक तो बढ़ती महंगाई के कारण ज़्यादा पैसा कमाने की कोशिशि में लोगों की ज़िन्दगी मशीन बन गई है, इस कारण लोग न तो खान–पान पर ध्यान दे पाते हैं, न व्यायाम कर पाते हैं, जिसका ख़मियाज़ा एक समय के बाद उनको बीमारी के रूप में भोगना पड़ता है।

क्यों ज़रूरी है व्यायामः–

दिन में कुर्सी पर बैठ कर काम करने और घर आने के बाद लेट कर घण्टों मोबाईल चलाने अथवा टीवी देखने से

व्यक्ति आलसी हो जाता है। ऐसे लोगों को हमेशा थकान बनी रहती है, सुस्ती रहती है। इससे उनको क़ब्ज़ और मोटापे की समस्या होने लगती है इसी लिए कहा जाता है कि नियमित व्यायाम बहुत ज़रूरी है बल्कि व्यायाम को भी दिनचर्या का एक हिस्सा बना लेना चाहिए, इससे स्वास्थ्य तो सही रहेगा ही, इलाज पर ख़र्च होने वाले पैसे भी बचेंगे, सुबह उठकर तेज़ क़दमों से टहलना, तैराकी करना, जागिंग करना, पीटी या इस जैसे हलके व्यायाम करना वर्तमान जीवन शैली में संजीवनी की तरह है।

नियमित व्यायाम करें:–

नियमित रूप से व्यायाम करना चाहिए, अगर समय न मिल रहा हो तो घर ही में हल्का व्यायाम कर लेना चाहिए। नियमित व्यायाम से शरीर में चुस्ती फुरती और एनर्जी बनी रहती है। इससे शरीर का कार्डियोबैस्कुलन सिस्टम भी अच्छा रहता है। व्यायाम करने से कैलोरी खर्च हो कर शरीर को ऊर्जा प्रदान करने लगती है जिससे कैलोरी चरबी के रूप से संचित नहीं हो पाती। व्यायाम से फेफड़े मस्तिष्क एवं हर अंग तक ऑक्सीजन प्रयाप्त मात्रा में पहुँचती है। व्यायाम शरीर की मांस पेशियों को मज़बूत करता है। वे लचीली और मज़बूत होती हैं। व्यायाम से शरीर कई तरह के दबाव को झेलने में सक्षम हो जाता है। व्यायाम का एक फ़ाइदा यह है कि इसके बाद अच्छी और गहरी नींद अच्छी आती है। इससे सुबह उठने पर मन मस्तिष्क ताज़ा रहता है। व्यायाम करने से भूख लगती है और शरीर का पाचन तंत्र ठीक काम करता है। ऐसा इस लिए होता है क्योंकि शरीर कैलोरीज़ को काफ़ी तेज़ी से ख़र्च करता है, पाचन क्रिया ठीक रहती है। इस कारण क़ब्ज़ गैस आदि की समस्या नहीं होती। भोजन के समय कैलोरी शरीर में जाती है वह व्यायाम करने से ख़र्च हो कर शरीर को ऊर्जा प्रदान करती है। इससे वज़न नियंत्रित रहता है और मोटापा तथा फ़ैट की समस्या नहीं होती है। डॉक्टरों का कहना है कि नवजवानों और अधेड़ लोगों को नियंत्रित व्यायाम करना चाहिए इससे यह कई तरह की बीमारियों से महफ़ूज़ रहेंगे।

❖❖❖

पृष्ठ....19...का शेष

हिन्दुओं के इस मामले में छूट दे दी गई है। धामी सरकार ने 7 मई, 2022 को यू0सी0सी0 का प्रारूप तैयार करने के लिए एक पाँच सदस्सीय समिति बनाई थी। इस सम्बन्ध में सरकार से यह प्रश्न भी पूछा जा रहा है कि उत्तराखण्ड में यू0सी0सी0 की इस समिति में तमाम अल्पसंख्यकों जैसे मुसलमानों, सिक्खों, पारसियों, बौद्ध और जैन मत के लोगों को क्यों नहीं शामिल किया गया? यू0सी0सी0 के सम्बन्ध में लेखिका व पत्रकार पामीला फिलीपोज़ का विचार है कि यू0सी0सी0 को पहाड़ी राज्य उत्तराखण्ड में मुस्लिम जनसंख्या वाले क्षेत्रों को नस्ली तौर पर शुद्ध बनाने के लिए राज्य सरकार 'मिशन' के हिस्सा के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। सम्भावना है कि उत्तराखण्ड के पश्चात गुजरात, आसाम और देश की अन्य भाजपा शासित राज्यों में भी यू0सी0सी0 का प्रयोग किया जायेगा लेकिन इन सरकारों की यह जिम्मेदारी बनती है कि असेम्बलियों की स्वीकृति से पूर्व इन तमाम शिकायतोंऔर आपत्तियों की स्वीकृति से पूर्व इन तमाम शिकायतों और आपत्तियों पर भी विचार कर लें जिनको इस लेख से रेखांकित किया गया है।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू मोहम्मद आमिर नदवी

गाजा में इसराईली अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने वाले अमेरिकी लेखक ने अपनी पत्नी के साथ इस्लाम कबूल किया:-

वाशिंगटन (एजेंसी) अमेरिका के मशहूर लेखक और सामाजिक कार्यकर्ता शान किंग ने इस्लाम कबूल कर लिया। विदेशी मीडिया के मुताबिक, शॉन किंग ने रमजान की शुरुआत में अपनी पत्नी के साथ इस्लाम कबूल कर लिया। शॉन किंग एक पत्रकार भी रहे हैं और उन्होंने कई अंतरराष्ट्रीय संगठनों में काम किया है। शान किंग पिछले साल 7 अक्टूबर को फिलिस्तीन पर इसराईली हमले के बाद से फिलिस्तीनियों के लिए आवाज़ उठा रहे हैं और फिलिस्तीनियों के खिलाफ इसराईली अत्याचारों के खिलाफ संयुक्त राज्य अमेरिका में विरोध प्रदर्शन का हिस्सा रहे हैं। शॉन किंग अमेरिका में अश्वेत समुदाय के लिए मशहूर अभियान ब्लैक लाइव्स मैटर का भी हिस्सा थे। शॉन किंग एक पादरी रहे हैं और उन्होंने अपना खुद का चर्च भी स्थापित किया था।

नीदरलैंड्स के पूर्व पी०एम० और पत्नी की इच्छामृत्यु, हाथ में हाथ लेकर दम तोड़ा:-

नीदरलैंड्स के पूर्व पी0एम0 ड्राइस वेन एग्त और पत्नी यूजीन ने कानूनी तौर पर इच्छा मृत्यु (एक्टिव यूथेनेसिया) के जरिए आखिरी सांस ली। दोनों की उम्र 93 साल की थी और वे लंबे वक्त से बीमार थे। डॉक्टरों की मदद से दोनों ने अंतिम सांस ली और आखिरी वक़्त तक एक-दूसरे का हाथ थामे रहे। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, 68 साल साथ रहने के बाद एग्त और यूजीन ने अपनी मौत का वक्त और दिन खुद तय किया था। दरअसल, नीदरलैंड्स में साल 2000 में यूथेनेसिया को क़ानूनी तौर पर मान्यता मिली थी। इसके तहत वही व्यक्ति इच्छा मृत्यु मांग सकता है, जो ऐसी बीमारी से पीड़ित हो, जो लाइलाज हो या उसकी सेहत में सुधार की कोई गुंजाइश न बची हो। एग्त को 2019 से ब्रेन हेमरेज हुआ था। उस दौरान वो एक सेमिनार में स्पीच दे रहे थ। कई बार वे पार्टी लाइन क्रॉस कर लेते थे। इसलिए विरोध भी होता था। यही वजह थी कि 2017 में उन्होंने पार्टी ही छोड़ दी। एग्त 1977 से 1982 के दौरान नीदरलैंड्स के प्रधानमंत्री रहें रिपोर्ट के मुताबिक दोनों को आसपास की कब्रों में दफनाया गया।

नीदरलैंड्स में इंजेक्शन देकर इच्छामृत्यु का चलन बढ़ रहा है। यहां हर साल 1,000 लोग मौत के लिए इच्छामृत्यु चुनते हैं। 2022 में 29 जोड़ों ने यह विकल्प चुना।

जरदारी पाकिस्तान के १४वें राष्ट्रपति चुने गए:-

पीपीपी के सह-अध्यक्ष आसिफ अली जरदारी पाकिस्तान के 14वें राष्ट्रपति चुने गए। उन्होंने पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ समर्थित सुन्नी इत्तेहाद काउंसिल के उम्मीदवार महमूद खान अचकजई को हराया।

आसिफ अली जरदारी को 411 वोट मिले, जबकि महमूद खान अचकजई को केवल 181 वोट मिले। 68 वर्षीय आसिफ अली जरदारी पाकिस्तान की दिवंगत प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो के पति और पूर्व विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो के पिता हैं। 2008 से 2013 तक राष्ट्रपति रह चुके आसिफ अली जरदारी को पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार का समर्थन हासिल था। वो आरिफ अल्वी की जगह लेंगे, जिनका पाँच साल का कार्यकाल पिछले साल खत्म हो गया।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ ۔ ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۔ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 01/04/2024 ______ تاریخ ______

अहले ख़ैर हज़रात से !

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकज़ा करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअ़त पर मज़बूती से जमने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख़्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के क़िलों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक्ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सदक़ात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए।

आमीन।

मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)
WEBSITE: WWW.NADWA.IN
Email : nizamat@nadwa.in

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतिया)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
ONLINE DONATION LINK
https://www.nadwa.in/donation

UPI करते समय रिमार्क में मद (अतिया/ज़कात/तअ़मीर) अवश्य डालें।

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं **08736833376** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961** के तहत छूट प्राप्त होगी।

Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 23 - Issue 02

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.
विशेषज्ञ
पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग
24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE
G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3